असली

एकादशादि सपिण्डी

(पितृ कर्म प्रेत मंजरी)

भाषा टीका विधि सहित

रचयिता :

प० रामस्वरूप शर्मा

मेरठ निवासी

प्रकाशक :

जवाहर बुक डिपो

(गुजरी बाजार वाली दुकान)

निकट आर्य समाज, स्वामीपाड़ा,

मेरठ ।

✽ श्रीसरस्वत्यै नमः ✽

एकादशादि सपिण्डी

(पितृ कर्म प्रेत मंजरी)

भाषा टीका विधि सहित

सम्पादक–

पण्डित रामस्वरूप शर्मा

मेरठ निवासी ने पण्डितों के सुभीते के लिये बनाया
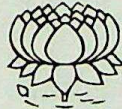
प्रकाशक एवं मुद्रक–

जवाहर बुक डिपो,

स्वामीपाड़ा, मेरठ।

संशोधित संस्करण)　　सम्वत् २०५६　　(मूल्य २० रुपये

एकादशादि श्राद्ध सामग्री

घड़ा १, करवा १, सराई १०, हंडले ४, दीवले ३६०, कुल्हिये या दौने ३६०, पलंग या खाट १, नारियल १, सुपारी ३२, लौंग १२, इलायची १२, चन्दन चूरा १.०० शहद २.००, पंचरंग २.००, मेवा पांचों २.००, पान ३२, दरियाई ०.५० गन्ने ५, रेशम डोरी १.००, ऐंकड़ा चांदी का १, कञ्चन पुरुष सोने का अथवा मूर्तिविष्णु भगवान की, सतनजा ५ किलो, लोहे की कील १, कपास १०० ग्राम, सन १ किलो, बर्तन ५, मिठाई ५००, ऋतुफल, लिहाफ १, बिछौना १, तकिया १, चादर १, जूती का जोड़ा १, कपड़े पांचों, चीज चांदी सोने की, जनेऊ १४, छतरी १, पंखा १, लाठी १, पतीलसोत १, चन्दन हुर्सा १, माला १, शीशा १, कंघा १, हार ५, दूध २५० ग्राम, गंगाजल, चावल २५० ग्राम, आटा सठ्ठी चावल ५०० ग्राम, अंगोछा १, अन्न साल भर के लिये यथाशक्ति, षटरस भाजी, नमक, मिर्च, मीठा, घी २५० ग्राम, दाल, हल्दी, चावल, खटाई, मसाला, तेल, मीठा, भोजन महाब्राह्मणों के लिये चार दक्षिणा बराबर की हों शय्या की १, भोजन की १, षोडशे की १, पिण्ड छेदन की १, सुफल की १, गौ की दक्षिणा या गौ दे, १ लाल वस्त्र गौ को, सफेद वस्त्र बछड़े को, कटोरा १, सींग सोने के २, खुरचांदी के ४, पीठ तांबे की १, लोटा १, सवारी या उसकी दक्षिणा, बालू रेत गा गंगाजी का रेत ५ किलो, आम की टहनी १, ढाक के पत्ते, कलाबा २, कुशा के आसन २, पैसे ५ रुपये के।

स्त्री के एकादशे में

तीयल १, उसके पहनने को सब चीज और पिटारी इत्यादि।

हवन की सामग्री

चावल ५०० ग्राम, घी १ किलो, तिल २ किलो, जौ १.५ किलो, बूरा यथाशक्ति, मेवा पाँचों, इन्द्र जौ ५० ग्राम, भोजपत्र ५० ग्राम, सिंदूर ५० ग्राम, लकड़ी ढाक की ५ किलो, उड़द २५० ग्राम।

॥ पदों की सामग्री ॥

छत्री १, जूती जोड़ा १, पांचों कपड़े, लोटा १, आसन १, पाँचों वर्तन, अंगूठी १, यह सब चीजें पदों में होनी चाहियें।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

एकादशादि सपिंडी कर्म

(पितृ कर्म प्रेत मंजरी)

भाषा टीका विधि सहित

(अथ प्रेताधिकारिणः)

पुत्रः पौत्रः प्रपौत्रो वा भ्राता वा भ्रातृसन्ततिः ।
सपिंडसंततिर्वापि क्रियार्हो नृप जायते ॥१॥

अर्थ–बेटा, पोता, प्रपोता, भाई या भाई का पुत्र या भाई की कन्या या कन्या पुत्र या कुटुम्ब का भाई उसको प्रेत क्रिया करनी चाहिए।

तेषामभावे सर्वेषां समानोदक सन्ततिः ।
सपिंडता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्त्तते ॥२॥

अर्थ–यदि इनमें से कोई नहीं हो तो जो नजदीक का सात पीढ़ी के अन्दर हो वह क्रिया करने के योग्य है।

समानोदकभावस्तु निवर्वेतां चतुर्दशात् ।
पितुः पुत्रेण कर्त्तव्या पिण्डदानोदकक्रिया॥३॥

अर्थ–चौदह पीढ़ी तक जल की क्रिया करनी चाहिए। पुत्र को अपने पिता का पार्वण श्राद्ध और तर्पण अवश्य करना चाहिए।

पुत्राभावे तु पत्नीस्यात् पत्न्यभावे सहोदरः ।
उच्छिन्न त्यक्तबंधूनां कारयेदवनीपतिः ॥४॥

अर्थ–पुत्र नहीं हो तो उसकी स्त्री कहे, स्त्री नहीं हो तो सगा भाई, भाई बन्धु नहीं हो तो राजा उसकी क्रिया करावे या करे।

मनु वाक्यम्–

पित्रोर्मरणकाले तु न चेत्स्यात्सन्निधौ।
सुतः अन्यः कुर्याद्दशाहं च न सर्वं कदाचन॥५॥

अर्थ–मनु महाराज कहते हैं कि पिता और माता के मरने के समय यदि पुत्र समीप न होवे तो अन्य पुरुष भी दस दिन की क्रिया कर्म कर सकता है बाद में एकादशादि सपिण्डी पुत्र को ही करना योग्य है।

(अथ एकादशादि कर्म)

(पूर्वदिने ब्राह्मणं निमन्त्र्य) पहले दिन महाब्राह्मण के घर न्यौता देना चाहिए। **(यजमानो ब्राह्मणश्च नद्यां तड़ागे वा स्नानं कारयेताम्)** यजमान और ब्राह्मण दोनों नदी या तालाब में नहावे। **(यजमानो दक्षिणाभिमुखोऽपसव्य कृत्वा आसनमुपविश्य)** यजमान दक्षिण की ओर मुख करके आसन पर बैठे अंगोछा जनेऊ सीधे कन्धे पर कर ले। **(श्राद्धसमीपे द्विजमाह्वयेत्)** श्राद्ध करने की जगह ब्राह्मण को बुलावे। **(ब्राह्मणश्चोत्तरमुख आसने उपविश्य)** ब्राह्मण उत्तर की ओर मुख करके बैठे। **(ब्राह्मणः प्रथमं वेदीं रचयित्वा)** ब्राह्मण पहले वेदी बनावे। **(नवग्रह स्थापनं)** उसमें नवग्रह बनाकर विधि सहित रंग भरे।

(द्विजासनसमीपे श्राद्धसमाप्ति पर्यन्तं तिलतैलेन घृतेनवा प्रज्वलितं दक्षिणमुख दीपं स्थापयेत्)

ब्राह्मण के आसन के समीप जब तक श्राद्ध समात्त न होवे तब तक तिलों के तेल का दीवा दक्षिण को मुंह करके और घी का पूरब को बाल कर रख दे।

(पुनः यजमानः पूर्वाभिमुख सव्यंकृत्वा)

फिर यजमान सव्य होकर पूरब को मुंह करके बैठे।

(यजमान आत्मशरीरं श्राद्धवस्तूनि सिंचेत्)

यजमान अपने शरीर पर और श्राद्ध की सब चीजों पर गंगाजल का छींटा दे। पाधा यह मन्त्र पढ़े—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

(पुनः प्राणायामं विष्णु स्मरणं च विधाय)

प्राणायाम कर विष्णु भगवान का ध्यान करे। हाथ जोड़े। (मंत्रः)

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥१
देवकीनन्दनं कृष्णं द्विभुजं पीतवासनम्।
प्रारंभे कर्मणां श्राद्धे पुण्डरीकाक्षं स्मरेद्धरिम्॥२

(यजमानोऽक्षतान् गृहीत्वा) यजमान हाथ में चावल ले।

(स्वस्तिवाचनं) पाधा नीचे लिखे मन्त्र पढ़े—

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकट चैव, विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
वक्रतुण्डमहाकायः कोटि सूर्य समप्रभः।
अविघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा॥४॥
हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिॅं हवामहे
प्रियाणान्त्वा प्रियपतिॅं हवामहे निधिना-
न्त्वा निधिपति ॅं हवामहे व्वसोमम आह-
मजानिगर्ब्भध मात्वम जासि गर्ब्भधम् ॥१॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः
विश्वेवेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः
स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥२॥ पयः पृथि-
व्यां पय ऽऔषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥३॥
ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्थोविष्णोः
स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥
ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता

चन्द्रमादेवतावसवो देवता रुद्रोदेवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणोदेवता ॥५॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षथ्ठं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वन-स्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व थ्ठं शान्ति शान्तिरेव शान्ति सामा शांतिरेधि ॥१७॥ ॐ एतन्ते देव सवितः यज्ञम्प्राहु र्बृहस्पतये ब्रह्मणे। ते यज्ञमेव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥७॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञ-मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञथ्ठं समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्ता मोम् ३ प्रतिष्ठः। ॐ एषवै प्रतिष्टानाम् यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥८॥

यजमान गणेश जी पर चावल छोड़ दे।

(संकल्पम्) जल, चावल, दक्षिणा हाथ में लेकर संकल्प करे।

ॐ तत्सद् विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः अद्य नमः

परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय श्रीब्रह्म-णोऽहनि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगेकलिप्रथमचरणेजम्बूद्वीपे भरतखण्डे, आर्य्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफलप्राप्तिकामनासिद्धयर्थे वर्तमान सम्वत्सरे। ऽमुकायने भास्करे मासानांमा-सोत्तमेमासे ऽमुक मासे ऽमुक पक्षे ऽमुक तिथौ ऽमुक वासरे ऽमुक नक्षत्रेयोगकरणल-ग्नयुक्ते ऽमुक गोत्रो ऽमुकशर्म्माहम् श्रीयज्ञ-पुरुषनारायणप्रीत्यर्थंएकादशाहादिश्राद्धेआदौ गणेशादि षोडशमातृणां सर्वेषाम् देवानां आवाहन पूजनमहं करिष्ये।

हाथ का जल, चावल, दक्षिणा छोड़ दे।

(गणेशादि पूजनम्) पहले गणेश जी का पूजन करे फिर सब देवताओं का पूजन करे।

(गणेशावाहनम्) गणेश जी का आवाहन करे।

ॐ विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम्।
अविघ्नं सर्वकार्येषु गणपतिमावाहयाम्यहम्॥

पाद्यं, स्नानं, गन्धं अक्षतां, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, आचमनीयं ताम्बूलं पूगीफलं, दक्षिणां समर्पयामि ॥

पैर धोवे, स्नान करावे और रोली, चावल, फूल, धूप दीप, मीठा, गंगाजल, पान, सुपारी, पैसा, सब सामग्री गणेश जी पर चढ़ावे (प्रार्थना) हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्भ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो तमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।

(ब्रह्माणमास्वयेत्) यजमान हाथ में चावल ले ब्रह्मा का आवाहन करे।

ॐ हंसपृष्ठसमारूढं जगदुत्पत्ति कारणम्।
गायत्री सहितं देवं ब्रह्माणमावाहयाम्यहम् ॥

(पूजनम्) पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे। (प्रार्थना) हाथ जोड़े।

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमम्पुरस्तात् विसीमतः सुरुचं व्वेनआवः सबुध्न्या ऽउपमाअस्य-विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च विव।

(विष्णोरावाहनम्) विष्णु का आवाहन करे।

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ।
रुक्मिणी सहितं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे। (प्रार्थना) हाथ जोड़े।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं ।
समूढ़मस्यपा ꣳ सुरे विष्णवे नमः ।।

(शिवस्यावाहनम्) शिवजी का आवाहन करे।

शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्ध त्रिलोचनम् ।
उमया सहितं देवं शिवमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे। (प्रार्थना) हाथ जोड़े।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च। मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

(ओंकारावाहनम्) ओंकार का आवाहन करे।

आवाहयाम्यहं देवं ओंकारं परमेश्वरम् ।
प्रणवत्रिगुणाधारमप्रमेयं सनातनम् ।।

(ओंकाराय नमः) ओंकार का पूजन कर हाथ जोड़े।

ओंकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ।।

(लक्ष्म्या आवाहनम्) लक्ष्मी का आवाहन करे।

क्षीरसागरसंभूतां शरीरे विष्णुमाश्रिताम् ।

यजमानहितार्थाय लक्ष्मी मावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे (प्रार्थना) हाथ जोड़े।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्म ऽइषाण।

(वरुणाय नमः) वरुण का पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद्।

(सूर्यावाहनम्) सूर्य का आवाहन करे।

दिवाकरं सहस्रांशुं ब्रह्माद्यैश्च सुरैर्नुतम्।
लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्य्यमावाहयाम्यहम्॥

(सूर्याय नमः) सूर्य का पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविताग्थेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

(चन्द्रमसे नमः) पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ इमं देवाऽ असपत्न ७ं सुवध्वम्महते

क्षत्त्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इममममुष्य पुत्रम् अमुष्यै पुत्रमस्यैव्विशऽएषवोऽमी राजा सोमोऽस्मा-कम् ब्राह्मणाना ꣳ राजा ॥

(भौमाय नमः) पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति ॥

(बुधाय नमः) पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्संधस्थे ऽध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यज्ञमानश्च सीदत ॥

(बृहस्पतये नमः) पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्यो अर्हाद्युु मद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् ॥

(शुक्राय नमः) शुक्र का पूजन करे हाथ जोड़े।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यम् इन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियम्

इदम्पयोऽमृतम्मधु ।

(शनिश्चराय नमः) पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

(राहवे नमः) पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ कयानश्चिव आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

(केतवे नमः) केतु का पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

(षोडशमातृभ्यो नमः) सोलह देवियों का पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजयाजया। देवसेनास्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः। हृष्टिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मदेवीत्वया सह। आदौ विनायकः पूजयेदन्तेचकुलमातरः॥

(सर्पेभ्यो नमः) शेष नाग का पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।
वासुक्याद्यष्टकुल नागेभ्यो नमः ॥

(यजमानो ब्राह्मणस्य तिलकं कृत्वा)

यजमान महाब्राह्मण के तिलक करे ।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

(रक्षाबन्धनम्) पौंहची बाँधे ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

(पवित्रीधारणम्) दोनों हाथों में कुशा की पवित्री पहने ।

द्वौ दर्भौ दक्षिणेहस्ते सव्य त्रीण्यासने तथा ।
पादमूले शिखायान्तु सकृद्यज्ञोपवीतके ॥

दो कुशा की पवित्री दायें हाथ में । ३ कुशा की पवित्री बायें हाथ में पहरे । १ कुशा बायें पैर तले । १ बाई अन्टी में । १ अंगोछे में १ चोटी में लगावे । प्रार्थना करे हाथ जोड़े ।

देवकीनन्दनं कृष्णं शंखचक्रगदाधरम् ।
आरम्भेकर्मणां श्राद्धे पुण्डरीकाक्षंस्मरेद्धरिम्॥

(प्रतिज्ञा संकल्पम्) तिल जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे।

अद्या ऽमुकगोत्रस्यामुकनामप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै दशघटश्राद्धं अहं करिष्ये ॥ (अपसव्यं पातितवामजानुः)

अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करके बांया घोंटा निवा ले फिर दस पत्ते पश्चिम से पूर्व को धरे १० पत्ते उनके नीचे और धरे (जुटकामादाय) फिर १० कुशा के पवित्री अर्थात् कुशवट ब्राह्मण लेकर संकल्प करे।

अद्या ऽमुकगोत्रस्यामुकनामप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथमघटश्राद्धादारभ्य दशघटश्राद्ध पर्यन्तम् दश आसनानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

फिर उन कुशवट ब्राह्मणों को ऊपर के दसों पत्तों पर एक-एक रख दे।

(हस्तार्घ्यं सजलं धृत्वा)

उन ब्राह्मणों के आगे एक दौना रख कर जल भरे।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भव० ॥

(तत्र पवित्रं क्षिपेत्) उसमें एक कुशा की पवित्री गेरे।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पु-नाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनीतच्छकेयम् ॥

(तिलान् क्षिपेत्) उसमें तिल डाले।

तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रयत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृन् लोकान् पृणाहिनः ॥ (गन्धंपुष्पं तूष्णीं क्षिपेत्)

रोली चन्दन का चूरा गेरे।

(हस्तार्घ्यं दक्षिणहस्तेनादाय वामहस्ते धृत्वा)

उस दौने को सीधे हाथ से उठाकर बांये हाथ पर रखकर।

(पवित्रं भोजनपात्रे धृत्वा)

उसमें से पवित्री काढ़कर भोजन वाले पत्ते पर धरे।

(तदुपरि किंचिदुदकांतरं दत्वा)

उस पवित्री पर करवे के जल का कुशा से छींटा लगावे।

(दक्षिणपाणिना संपुटितं कृत्वा)

फिर उस दौने को सीधे हाथ पट करके ढके।

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवार्याः। हिरण्वर्णा यज्ञियास्तान् आपः शिवास ॐ स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

(पुनः दक्षिणहस्ते ऽर्घ्यमादाय संकल्पं कुर्यात्)

उस दौने को सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथम घटश्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्धपर्यन्तम् एषहस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

उस दौने का जल उन पत्तों (ब्राह्मणों) पर अंगूठे से चढ़ावे।

(अर्घे पुनः प्रत्यर्घमस्तु वामपार्श्वे न्युब्जीकुर्यात्)

जो पवित्रा भोजन पात्र पर धरा है उसे उठाकर दौने में डाले, फिर उस दौने को कुशवट के ऊपर बांई तरफ उल्टा कर दे। **(गन्धादिदानम्)** पान, सुपारी, तिल, फूल, चावल, रोली, मीठा सब सामग्री चढ़ावे, १० बत्ती तेल की जलावे।

अद्याऽमुकगोत्रस्यामुक नाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्धां-तर्गत प्रथमघट श्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्ध-पर्यन्तम् एतानि गंधादीनि ते मया दीयन्ते तवो० ॥

(चतुष्कोणमंडलम् कुर्यात्) दसों पत्तों के चारों तरफ जल फेरे।

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डलतोयागं सर्वभूतानि रक्षतु ॥

(अन्नं सजलं परिवेष्य) नीचे के दसों पत्तों पर थोड़ा-थोड़ा अन्न

रख दे और दस दौने जल के भर कर उनके पास धरे। (संकल्पः)

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथम घटश्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्ध पर्यन्तं इदमन्नं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

(वेदिकां कृत्वा) पिण्डों के लिए मिट्टी की दस वेदी बनावे।

(जलंप्रोक्ष्य) उन दसों वेदियों पर जल छिड़के।

अयोध्या मथुरा माया, काशी कांची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायिकाः ।। (रेखाकरणम्)

दसों वेदी पर अलग-अलग कुशा से दस लकीर खींचे।

(तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि क्षिपेत्)

उस कुशा को ईशान दिशा में रख दे।

(पुनः दश कुशासनं गृहीत्वा)

दस कुशा के टुकड़े लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथमघटश्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्ध पर्यन्तं पिण्डस्थाने कुशासनानि ते मया दीयन्ते तपोपतिष्ठन्ताम् ।।

कुशा के टुकड़े एक एक लकीर पर धर दे।

(अर्घे अवने जलम्) एक दौने में जल लेकर संकल्प करे।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथम घटश्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्ध पर्यन्तम् पिण्डस्थानेषु कुशेषु अत्रावनेजलं ते मया दीयते तवो० ।

दौने का जल जरा २ सा अंगूठे के नीचे को दसों कुशाओं पर छोड़ दे उस दौने को अपने आगे सीधा धर ले।

(पिंडं दद्यात्) एक पिण्ड का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथमघट श्राद्धपर्यन्तम् एष पिंडस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

पिण्ड को प्रथम वेदी की कुशा पर रख दे इसी प्रकार दसों पिण्ड के १० संकल्प करे। जैसे प्रथम पिण्ड में प्रथम घट श्राद्ध कहा है, दूसरे पिण्ड में द्वितीय घट, तीसरे में तृतीय घट, इसी प्रकार दसों पिण्डों के क्रमानुसार १० संकल्प करे और दसों वेदियों पर दसों पिण्डों को रख दे।

(पुनः अर्घ्यम्) फिर जो दौना आगे रक्खा है उस दोने में जल लेकर संकल्प करे।

अद्य अमुकगोत्रस्यअमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथमघट श्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्ध पर्यन्तम् पिंडोपरि प्रत्यवने जलं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

दौने का जल दसों पिण्डों पर चढ़ा दे।

(गन्धादिदानम्) फिर उन दसों पिण्डों पर सामग्री चढ़ावे, दस बत्ती तेल की जलावे।

अद्याऽमुक गोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अन्तर्गत प्रथमघट श्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्धपर्यन्तं पिण्डोपरि एतानि गंधादीनि ते मया दीयते० ॥

(अन्नोदकं परिवेष्य) एक दौने में आटा, दूसरे में जल भर कर पिण्डों के आगे धरे। **(संकल्पः)**

अद्यामुक गोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्धांतर्गत प्रथमघट श्राद्धारारभ्य दशघट श्राद्धपर्यन्तं इमानि अन्नोदकानि

ते मया दीयते० ॥

(सव्यं दक्षिणासंकल्पः) पूरब को मुंह करके और दस पैसे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलो० दशघट श्राद्धांतर्गत प्रथमघट श्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्धपर्यन्तं दशपिंड प्रतिष्टार्थं ताम्रं अर्कदैवतं यथानाम गोत्राय महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

(अपसव्यम्) अपसव्य होकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलो० दशघटश्राद्धांतर्गत प्रथमघट श्राद्धादारभ्य दशघट श्राद्धपर्यंतं पिण्डोपरि अच्छिन्नजलधारांते मया दी० ॥

(अच्छिन्नजलधारां दत्वा)

करवा हाथ में उठा कर पिण्डों पर जल चढ़ा दे।

(सव्यं विष्णुध्यानम्) सव्य होकर ईश्वर का ध्यान करे। हाथ जोड़े, यह मन्त्र पढ़े।

अनादि निधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ।
अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमुक्तिप्रदो भव ॥

(अपसव्यम्) अपसव्य होकर दक्षिण को हाथ जोड़े।

इमं लोकं परित्यज्य जातोऽसि परमां गतिम् ।
मनसावायुरूपेण कुशैस्त्वां योजयाम्यहम् ॥

(अभिगम्यतां विसर्जनम्) पिण्डों के नीचे की कुशा निकाल कर सब पिण्डों को व्रहाँ से उठाकर जल में सिला दे।

(इति दशघटश्राद्ध समाप्तम्)

नवघट श्राद्ध प्रारम्भः

प्रथमेऽहनि १ तृतीयेऽहनि ३ पञ्चमे ५ सप्तमे ७ पिवा। नवमे ९ एकादशे ११ चैव नवक श्राद्धान्यनुक्रमात् ॥ (सव्यम्)

पूरब को हाथ जोड़े। **देवकीनन्दनं कृष्णं०** ॥ प्रतिज्ञा संकल्पः

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथम दिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तं नवकश्राद्धमहं करिष्ये ॥

(अपसव्यं जुष्टकामादाय)

अपसव्य होकर ६ पत्ते धरे, दक्षिण से पूर्व को ६ पत्ते उनके नीचे और धरे। फिर ६ कुशा के ब्राह्मण लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोका० नवक श्राद्धान्तर्गत प्रथमदिन

श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तं इमान्या-सनानि मद्दत्तानि तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

फिर उन ६ ब्राह्मणों को ऊपर के पत्तों पर एक-एक रख दे।

(अर्घ्यम्) उनके आगे एक दौना धरे।

(तत्र पवित्रं क्षिपेत्) उनमें कुशा का पवित्रा गेरे, जल भरे।

ॐ शन्नो देवी० ॥ सब सामग्री गेरे।

(अर्घ्यपात्रं वामहस्ते धृत्वा) उस दौने को बायें हाथ पर धरे।

(पवित्रं भोजनपात्रे धृत्वा)

पवित्रा काढ़ कर नीचे के भोजन वाले पत्ते पर धरे।

(तदुपरि किंचिदुदकान्तरं दत्वा)

उस पर जल का छींटा लगावे।

(दक्षिणपाणिना संपुटितं कृत्वा)

फिर उस दौने को सीधे हाथ से ढके। यह मन्त्र पढ़े।

ॐ या दिव्या आपः० ॥

फिर उस दौने को सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तम् एष हस्तार्घो मद्दत्तस्तव उपतिष्ठताम् ॥

(अर्घे पुनः प्रत्यर्घमस्तु । वामपार्श्वे न्युब्जी कुर्यात्)

भोजन पात्र पर से पवित्रा दौने में डाल कर ऊपर के पत्तों से बाईं तरफ उल्टा कर दे।

(गंधादिदानम्) सब सामग्री चढ़ावे, तेल की ६ बत्ती बाले **(संकल्पः)**

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तम् एतानि गन्धादीनि मद्दत्तानि तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

(चतुष्कोणमंडलं कुर्यात्) पत्तों के चारों ओर जल फेरे **(मन्त्रः)**

यथाचक्रायुधो० ॥ (अन्नं सजलं परिवेष्य)

नीचे के पत्तों पर अन्न जल परोसे। **(संकल्पः)**

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यैनवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तम् इमान्यन्नोदकानि मद्दत्तानि तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

(षड् वेदिकाः कृत्वा) ६ वेदी बनावे।

(जलेन प्रोक्ष्य) उन पर जल का छींटा दे। यह मन्त्र पढ़े—

अयोध्या मथुरा० ॥

(षड्रेखा करणम्) उन वेदियों पर कुशा से ६ लकीर खींचे।

(तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि क्षिपेत्)

उस कुशा को ईशान दिशा में रख दे।

(पुनः षड् कुशासनानि गृहीत्वा)

६ टुकड़े कुशा के लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तं पिण्डस्थानेषु कुशोदकानि मद्दत्तानि तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

उन कुशाओं को क्रमानुसार वेदी की लकीरों पर रख दे।

(अर्ध अवने जलम्) जल का दौना भर कर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तं पिंडस्थानेषु कुशेषु अत्रावनेजलं षोढा विभज्य मद्दत्तम् तवोपतिष्ठताम् ॥

दौने का जल छः कुशाओं पर चढ़ावे।

(पिण्डं दद्यात्) एक पिण्ड का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिनसम्बन्धी एष पिण्डो मद्दत्तस्तवोपतिष्ठताम् ॥

(एवं तृतीयपंचमसप्तमनवमएकादश पिण्डान् दद्यात्)

यह पिण्ड पहली वेदी पर रख दे। जिस प्रकार पहले पिण्ड का संकल्प किया है इसी प्रकार पांचों पिंडों का संकल्प करे। पहले पिण्ड में प्रथम दिन सम्बन्धी कहा है दूसरे पिण्ड में तृतीय दिन सम्बन्धी तीसरे में पञ्चम दिन सम्बन्धी कहे। चौथे में सप्तम दिन सम्बन्धी, पाँचवे में नवम दिन सम्बन्धी कहे और छटे पिण्ड में एकादश दिन सम्बन्धी कहना चाहिए।

(प्रत्यवने जलम्) एक दौना जल का भर कर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्ध पर्यन्तम् पिण्डोपरि प्रत्यवने जलानि षोढा विभज्य मद्दतं तवोपतिष्ठताम् ॥

दौने का जल छः ओं पिण्डों पर चढ़ावे।

(गन्धादिदानम्) सब सामग्री चढ़ावे ६ बत्ती जलावे, संकल्प करे।

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य

प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्धान्तर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तम् पिण्डोपरि एतानिगंधादीनि मद्दत्तानि तवोपतिष्ठन्ताम् ।

(पुनः अन्नोदकं) अन्न जल परोसे। (संकल्पः)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथम दिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्ध पर्यन्तम् इदमन्नोदकम् मद्दतं तवोपतिष्ठताम् ।

(सव्यम् दक्षिणा संकल्पः) ६ पैसे लेकर पूर्व को संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै दशघट श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्ध पर्यन्तम् षट्पिण्ड प्रतिष्ठासिध्यर्थं ताम्रमर्क दैवतं यथानामगोत्राय महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे। (अपसव्यं संकल्पः)

अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह कर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै नवक श्राद्ध अंतर्गत प्रथमदिन श्राद्धादारभ्य एकादशाह श्राद्धपर्यन्तं नवक श्राद्धे षट् पिण्डोपरि अच्छिन्न जलधारां मद्दत्तां तपोपतिष्ठताम् ।

(अछिन्नजलधारां दत्वा)

पिण्डों पर करवे से जल की धारा देवे।

(सव्यम्) सव्य होकर हाथ जोड़े।

अनादिनिधनोदेव० ॥

(अपसव्यम्) अपसव्य होकर फिर हाथ जोड़े।

इमं लोकं परित्यज्य जातोऽसि परमां गति०

(अभिगम्यतां विसर्जनम्) पिण्डों के नीचे की कुशा निकाल कर सब पिण्डों को वहां से उठाकर जल में सिला दे।

(इति नवघटश्राद्धं समाप्तम्)

अथ शय्यादानकम्

सव्य होकर अपने शरीर पर गंगाजल का छींटा लगावे। मन्त्र–

अपवित्रः पवित्रोवा० (वरण संकल्पः)

एक पान पर कलावा रोली फूल पैसा धरकर महाब्राह्मण के वरण का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै शय्यादा-

नार्थमेभिः पुष्पाक्षततांबूलपुंगीफल दक्षिणावा-सोभिरमुकगोत्रं अमुकशर्माणम् त्वामहं वृणे।

(ब्राह्मणस्य तिलकं कृत्वा)

जो रोली पान के ऊपर धरी है उससे महाब्राह्मण के तिलक करके हाथ जोड़े। मन्त्र–

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय० । पौंहची बांधे।

ॐ व्रतेनदीक्षा० । फिर पान सुपारी दक्षिणा महाब्राह्मण को देकर महाब्राह्मण के पैर धोवे। मन्त्र–

ॐ यत्फलम् कपिलादाने० ।

(प्रेतशय्यायाः शिरश्चोत्तरे कुर्यात्)

प्रेत की खाट का सिरहाना उत्तर की तरफ करे।

(कुशत्रयेण शय्याम् सिञ्चेत्)

कुशा से गंगाजल का शय्या पर छींटा लगावे। मन्त्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा० । **(पादार्घ तिलकंकृत्वा)**

फिर खाट के सिरहाने की ओर का पाया धोवे, फिर पाये के रोली से तिलक करे। पुरुष की शय्या के खड़ा और स्त्री की शय्या के पड़ा तिलक करे। फिर उस पाये में एक बड़ा सा कलावा बाँधे, कलावा हाथ में थामकर और जल चावल दक्षिणा लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै पूर्वकाय

स्वर्गलोकप्राप्तिकामः इमां शय्यां सोपस्करां फलवस्त्राभरणादिभूषिताम् सतिलकाम् उप-वह्नीणादिसहितां पित्तलादि पात्रसहितां उत्तानां गिरीशदैवतां अमुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं सम्प्रददे।

कलावे का सिरा महाब्राह्मण को दे दे। फिर बाद में स्वस्ति कहे।

(दान प्रतिष्ठा संकल्पः)

एक पैसा, जल, चावल हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै अद्यकृतैतच्छ-य्यादानप्रतिष्ठा सिद्धयर्थं ताम्रं अर्क दैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। (प्रार्थना) हाथ जोड़े।

यथाकृष्णत्वदीयाहि अशून्या क्षीरसागरे। शय्या तथाप्यशून्यास्तु मम जन्मनि जन्मनि दत्वैवं तल्पममलं सामाप्य च विसर्जयेत्। पुरंदरगृहे सर्वं सूर्यपुत्रालये तथा ॥ उपतिष्ठेत् सुखं जन्तोः शय्यादान

प्रभावतः। पीडयन्ति न तं याम्याः पुरुषा भीषण जनाः ॥ न घर्मेण च शीतेन न बाध्यः स नरः क्वचित्। शय्यादानप्रभावेण प्रेतो मुच्येतबन्धनात्। अतिपापसमायुक्तः स्वर्गलोकं स गच्छति। विमानवरमारूढ़ः सेव्यमानो ऽप्सरोगणैः ॥

॥ इति शय्यादानम् समाप्तम् ॥

अथ कांचनपुरुष दानम्

(सव्यंसंकल्पः) सव्य हो जल चावल लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै स्वर्गलोकप्राप्तिकामः कांचनपुरुषदानमहं करिष्ये।

(कांचन पुरुषं दुग्धे स्नानं कारयेत्) सोने की मूर्ति को ताँबे के पात्र में दूध व गंगाजल से स्नान करावे। मन्त्र—

नमोऽस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः। नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानंतवासुदेव ! नमोऽस्तुते ॥

(गन्धाक्षतपुष्पफलादिभिः संपूज्य पट्टवस्त्रेण कांचन पुरुषं स्थापयित्वा)

अनामिका अंगुली से रोली लगाकर पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे, फिर दरयाई फल कपास भी चढ़ावे, (प्रार्थना) हाथ जोड़े। मन्त्र–

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा ꣳ सुरे ॥

(वरणसंकल्पः) ब्राह्मण के वरण का संकल्प करे, एक पान पर कलावा, रोली, चावल, फूल, पैसा धर करके।

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै एभिर्गंधाक्षत पुष्पताम्बूल दक्षिणावासोभिरमुकगोत्रम् अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ॥

महा ब्राह्मण के पान की रोली से तिलक करे।

ॐ नमो ब्रह्मण्य० ॥

पौंहची बांधे। **मन्त्र–व्रतेनदीक्षा०** ॥

(कांचनपुरुष सं०) सोने की मूर्ति, जल, चावल, दक्षिणा हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै स्वर्गलोकप्राप्तिकामः फलवस्त्रसमन्वितं लक्ष्मीसहितं

इमं काञ्चनपुरुषं विष्णुदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

ब्राह्मण को दे दे। **(स्वस्तिप्रतिवचनम्)** महाब्राह्मण ऐसा कहे।

(दान प्रतिष्ठा संकल्पः)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै कृतैतत्कांचन पुरुषदान प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रं अर्कदैवतं यथानाम गोत्राय महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। यह भी महाब्राह्मण को दे दे।

(अथ द्विजदम्पतीपूजनं कृत्वा)

अब महाब्राह्मण और उसकी ब्राह्मणी का पूजन करे।

(यजमानः प्राङ्मुख उपविश्य)

फिर यजमान पूर्व की ओर को मुख करके बैठे।

(सव्यं गंगाजल आचम्य) सव्य होकर गंगाजल का आचमन करे, यह मंत्र पढ़े।

ॐ अपवित्रः पवित्रो०।

(विष्णुध्यानम्) हाथ जोड़े। मन्त्र—

देवकीनन्दनं कृष्णं०।

(संकल्पः) जल चावल लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व

विमुक्तये स्वर्गलोकप्राप्तिकामो दंपतीपूजन-महं करिष्ये। (द्विजदम्पत्यै पदार्थं दत्वा)

ब्राह्मण और ब्राह्मणी के पैर धोवे। मन्त्र–

यत्फलम्कपिला दाने० ॥

(दम्पति शय्योपरि प्राङ्मुख उपविश्य)

ब्राह्मण और ब्राह्मणी खाट पर पूर्व को मुंह करके बैठे।

(गंधतिलकवस्त्राभरणपुष्पमाल्यादिभिः संपूज्य)

यजमान ब्राह्मण और ब्राह्मणी के रोली का टीका करे, फिर कपड़े गहने फूलों की माला, फल, मीठा और पान आदि दक्षिणा देवे, फिर एक नारियल के ऊपर कलावा बांधकर उसके ऊपर दक्षिणा रखकर ब्राह्मणी की गोद में दे।

(शय्या संचालयेत्) खाट उठाकर जरा हिलादे।

(द्विजचरणौ संवाहयेत्) ब्राह्मण के पैरों के दबावे।

(पुनः प्रदक्षिणां कुर्यात्) खाट की परिक्रमा करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

(प्रार्थना) हाथ जोड़े। मन्त्र–

प्रेतस्य प्रतिमह्येषा सर्वोपस्करसंयुता।
सर्वरत्नसमायुक्ता सर्वविप्राय चार्पयेत् ॥

(यथासम्भवं अश्वरथापि दद्यात्) यथाशक्ति घोड़ा रथ या पालकी अथवा कोई सवारी महाब्राह्मण को देवे।

(अथाश्वदानमहात्म्यं महाभारते)

महाभारत में घोड़े के दान करने का पुण्य इस प्रकार लिखा है।
श्लोक–

सर्वोपकरणोपेतम्, युवानन्दोषवर्ज्जितम् ।
योऽश्वं ददाति विप्राय, स्वर्गलोके महीयते ।।

घोड़े पर काठी और लगाम हो और घोड़े की जवान उम्र हो, सब दोषों से वर्जित हो, कांणा, लंगड़ा, बूचा आदि न हो। ऐसा घोड़ा जिस मनुष्य के लिये जो मनुष्य ब्राह्मण को देता है वह मनुष्य निश्चय स्वर्ग लोक को जाता है।

(सर्वोपस्कर सहितमश्वं वस्त्रगन्धादिभिरभ्यर्च्य दद्यात्)

सब गहने पहरा कर और सब कपड़े उढ़ाकर रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे।

(ब्राह्मण वरणसंकल्पः)

ब्राह्मण का वरण करे, पान पर सब चीजें रख कर।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै मम पितुः स्वर्गलोकप्राप्तिकामस्तुरंग दानार्थमेभिः करस्थद्रव्यैस्त्वामहं वृणे । ब्राह्मण के पौंहची बांधे।

व्रतेन दीक्षा०। तिलक करे।

नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्रा० ।

(पुनः अश्वकर्णं गृहीत्वा संकल्पं कुर्यात्)

घोड़े का कान पकड़ कर संकल्प करे। **(संकल्पः)**

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै मम पितुः समस्तपापक्षयपूर्वकं सूर्य्यलोकप्राप्तिकामः इममश्वं सर्वोपस्कर सहितम् हिरण्यदक्षिणायुतं यमदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे महाब्राह्मणाय तुभ्यमहम् सम्प्रददे ॥ न मम इति ॥ महाब्राह्मण को दे दे।

(दानप्रतिष्ठासंकल्पः) उसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० इममश्वदान प्रतिष्ठासिध्यर्थं ताम्रं अर्कदैवतम् यथानामगोत्राय महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ (प्रार्थना) हाथ जोड़े।

उच्चैः श्रवास्त्वमश्वानां राज्ञो विजयकारकः।
सूर्य्यवाह ! नमस्तुभ्यं बहुशान्ति प्रयच्छ मे ॥

(रथादिदानं कृत्वा) रथ, बहली, तांगा, बग्घी का दान करे।

(नानाद्रव्येण रथाधिष्ठातृदेवाय नमः इत्यनेन संपूजयेत्)

अनेक द्रव्यों से रथ का अधिष्ठाता जो देवता है उसका पूजन करे अर्थात् रथ पर रोली का छींटा लगाकर सब सामग्री चढ़ावे। (ब्राह्मणवरण संकल्पः) ब्राह्मण के वरण का संकल्प करे।

(चक्रम् स्पृष्ट्वा संकल्पः कुर्यात्)

रथ का पहिया पकड़कर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य ममपितुः अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै अक्षयस्वर्गादिसुखाप्तिकामः सोपस्करमिदं रथं विश्वकर्मदैवतं सालंकृतं सयुग्मवृषभ-सहितम् तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम इति ॥

ब्राह्मण को दे दे।

(ब्राह्मणः स्वस्तीति वचनंवदेत्) ब्राह्मण स्वस्ति कहे।

(रथदानप्रतिष्ठासंकल्पः) रथ दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य० ॥ रथदानप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इमां हस्तस्थां दक्षिणां यथा पैवतकां अमुकगोत्राय महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

(प्रार्थना) यजमान फिर हाथ जोड़े और यह मन्त्र पढ़े—

रथाय रथनाथाय नमस्ते विश्वकर्मणे।
विश्वरूपाय देवाय अरुणाय नमोऽस्तु ते॥१॥

॥ इति द्विजदम्पत्यादि कृत्य समाप्तम् ॥

षोडशाह श्राद्धप्रारम्भ

(सव्य संकल्पः) सव्य✡ होकर संकल्प करे।

अद्यअमुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै अक्षयस्वर्ग-लोकगमनकामनया षोडशाह श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य वार्षिक श्राद्धपर्यन्तम् षोडशाहश्राद्धमहं करिष्ये ॥ (अपसव्यं)

अपसव्य❋ होकर १६ पत्ते धरे। १६ पत्ते उनके नीचे और धरे फिर १६ कुशा के ब्राह्मण लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्रा-द्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादश मासिक श्राद्धपर्यन्तम् एकादशाह श्राद्धे इमान्यास-

---

(सव्यम्) जहां कहीं वह शब्द आवे वहां अंगोछा जनेऊ बांये कन्धे पर करे पूर्व की तरफ को मुंह करके संकल्प का जल अंगुली सीधी करके छोड़े।

और जहां कहीं (अपसव्यम्) यह शब्द आवे तो अंगोछा, जनेऊ सीधे कन्धे पर करके दक्षिण की तरफ को मुंह करे। संकल्प का जल अंगूठे के नीचे को छोड़ना चाहिए।

नानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

एक-एक ब्राह्मण को एक-एक पत्ते पर स्थापित करे।

(अर्घ) उसके आगे एक दौना धरे।

(तत पवित्रं क्षिपेत्) उसमें एक कुशा का पवित्रा गेरे। मन्त्र—

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ० ॥ उसमें जल भरे मन्त्र—

शन्नोदेवीरभिष्टय० ॥

(तिलं प्रक्षिप्य) तिल गेरे। मन्त्र—**तिलोसि सोमदैवत्यो०** ॥

(गन्धपुष्पाक्षतान् तूष्णीं क्षिपेत्) रोली फूल चावल गेरे।

(अर्घपात्रं वामहस्ते धृत्वा) दौने को बायें हाथ पर धरे।

(पवित्रं भोजनपात्रे धृत्वा) पवित्री काढ़कर भोजन के पत्ते पर धरे।

(तदुपरि किंचिदुदकांतरं दत्वा)

उस पर कुशा से जल का छींटा लगावे।

(पाणिनां संपुष्टितं कृत्वा) दौने को सीधे हाथ से ढके।

ॐ या दिव्या आपः पयसा०

(संकल्पः) दौने को सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादशमा-सिकश्राद्धपर्यन्तम् एकादशाहश्राद्धे एष

हस्तार्घस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

उस दौने का थोड़ा-२ जल सब ब्राह्मणों पर चढ़ावे।

(अर्घे पुनः प्रत्यर्घमस्तु वामपार्श्वे न्युब्जीकुर्यात्)

पवित्रा दौने में डालकर बांई ओर को उल्टा कर दे।

(सव्यं छत्रसंकल्पः) सव्य होकर छतरी का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै खरतरणीकिरणोपनुत्तये इदं छत्रं उत्तानांगिरस दैवतम् अमुकगोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ब्राह्मण को दे दे।

(दानप्रतिष्ठा संकल्पः) दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै कृतैतच्छत्रदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

(उपानद्दानम्) जूते का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै तप्तबालुकासिपत्रवनकंटकितप्रभू दुर्गसंततुकामः

इमे उपानहौ उत्तानां गिरसदैवते अमुकगो-त्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण फिर स्वस्ति कहे।

(दानप्रतिष्ठा संकल्पः) दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अद्य कृतैतदुपानद्दान प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं यथानामगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ब्राह्मण को दे दे।

(अपसव्यं गन्धादिदानम्)

अपसव्य होकर सब सामग्री चढ़ावे। १६ बत्ती बाले। संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धान्तर्गतैकादशाह श्राद्धादारभ्य द्वादश मासिक श्राद्धपर्यन्तं षोडशाहश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

(चतुष्कोणमण्डलं कुर्यात्) चारों तरफ जल फेर दे। मन्त्र—

यथाचक्रायुधो विष्णु ॥

(अन्नं सजलं परिवेष्य) अन्न जल परोसे, संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै एकादश-

श्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् एकादशाहश्राद्धे इदमन्नोदकं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(**वेदिका कृत्वा**) गंगा रज की १६ वेदी बनावे।

(**जलेन प्रोक्ष्य**) उन पर जल छिड़के। मन्त्र—

अयोध्या मथुरा माया काशी० ॥

(**रेखाकरणम्**) उन पर कुशा की १६ लकीर खींचे।

(तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि त्यजेत्)

उस कुशा को ईशान दिशा में रख दे। फिर १६ कुशा के टुकड़े लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धांतर्गतैकादशाह श्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् एकादशाह श्राद्धे पिण्डस्थाने कुशासनानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

(**अर्घ अवने जल**) एक दौना जल का भरकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह

श्राद्धान्तर्गतैकाशाह श्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् एकादशाह-श्राद्धे पिण्डस्थाने कुशोपरि प्रत्यवने जलं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(श्लोक) १. याम्य, २. सौरीपुरं, ३. वरेन्द्रभुवनं, ४. गन्धर्वं। ५. शैलागमं, ६. क्रौंचं, ७. क्रूरपुरं, ८. विचित्रभुवनम्॥ ९. बव्हापदं, १०. दुखदं, ११. नानाक्रन्दपुरं, १२. सुतप्तभुवनं। १३. रौद्रं, १४. पयोवर्षणं, १५. शीताढ्यम्, १६. बहुभीतिधर्म्मभुवनं याम्यं पुरं चाग्रतः॥

जिस प्रकार इस श्लोक में १६ नगर लिखे हैं इसी प्रकार एक-एक नगर के निमित्त एक-एक पिण्ड करावे सोलह नगरों के सोलह संकल्प नीचे लिखे हैं।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धान्तर्गत आद्य श्राद्धादारभ्य द्वादश-मासिक श्राद्धपर्यन्तम् निर्विघ्नता पूर्वकाऽक्षय

स्वर्ग लोक गमनकामनया आद्य श्राद्धे याम्यपुरे प्राप्त्यर्थं एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

इस पिण्ड को पहली वेदी पर रख दे हर एक पिंड का संकल्प कर वेदी पर रखता जावे, दूसरे पिण्ड का संकल्प करे ॥२॥

अद्या० प्रथममासिकश्राद्धे याम्यपुरात् सौरीपुर नगरपर्यन्तम् पिण्डस्ते मया० ॥

तीसरे पिण्ड का संकल्प करे।

अद्या० त्रिपाक्षिकश्राद्धे सौरीपुरात् वरेन्द्रपुर पर्यन्तम् एष पिंडस्ते० ॥ चौथे पिण्ड का संकल्प करे

अद्या० द्वितीयमासिकश्राद्धे वरेन्द्रपुरात् गन्धर्वपुरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते ॥ ५वां पिण्ड ले।

अद्या० तृतीयामासिकश्राद्धे गन्धर्वनगरात् शैलागमपुरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते० ॥

छटा पिण्ड ले। अद्या० चतुर्थमासिकश्राद्धे शैलागमपुरात् क्रौंचपुरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते० ॥ ७वां पिण्ड ले। अद्या० पञ्चम मासिक श्राद्धे क्रौंचपुरात् क्रूरपुरपर्यन्तम्

एष पिण्डस्ते० ॥ ८वीं पिण्ड ले। **अद्या० ऊन षाण्मासिकश्राद्धे क्रूरपुरात् विचित्रपुर पर्यन्तम् एष पिण्डस्ते० ॥**

(सव्यं नौकासंकल्पः) सव्य होकर नाव का संकल्प करे या गन्नों में रेशम की डोर बांध कर और डोर हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादश मासिक श्राद्धपर्यन्तम् इमां इक्षुमयीं नौकां महानद्युत्तारणार्थं धर्मराजदैवतं अद्यामुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ महाब्राह्मण को दे दे।

(नौकादानप्रतिष्ठासंकल्पः) नाव की दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य नौका-दानप्रतिष्ठासिध्यर्थं ताम्रमर्क दैवतम् यथानामगोत्राय अमुक शर्मणे महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

(अपसव्यम्) अपसव्य होकर नवें पिण्ड का संकल्प करे।

अद्या० षाण्मासिक श्राद्धेविचित्रनगरात् बव्हापदपुरपर्यंतं एषपिंडस्ते० ॥ १०वां पिंड ले। अद्या० सप्तममासिकश्राद्धेबव्हापद नगरात् दुःखदपुरपर्यन्तम् एषपिंडस्ते० ॥ ११वां पिंड ले। अद्या० अष्टममासिक श्राद्धे दुःखदनगरात् नाना क्रन्दपुरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते मया दीयते तवो० ॥ १२वां पिण्ड ले। अद्या० नवम मासिकश्राद्धे नानाक्रन्दनगरात् सुतप्तपुर पर्यन्तम् एष पिण्डस्ते० ॥ १३वां पिण्ड ले। अद्या० दशममासिक श्राद्धेसुप्तनगरात् रौद्रपुरपर्यन्तम् पिण्डस्ते० ॥ १४वां पिण्ड ले। अद्या० एकादशमासिक श्राद्धे रौद्रनगरात् पयोवर्षणपुरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते मया दीयते० ॥ १५वें पिण्ड का संकल्प करे। अद्या० ऊनाब्दिकमासिक श्राद्धे पयोवर्षणनगरात् शीतोढ्यपुरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते ॥ १६वें पिण्ड का संकल्प करे। अद्यामुक गोत्रस्य

अमुकनाम प्रेतस्य द्वादशमासिक श्राद्धे शीताढ्यनगरात् धर्मपुरनगरपर्यन्तम् एष पिण्डस्ते मया दीयते० ॥

यदि अधिक मास हो तो १७वें पिण्ड का यह संकल्प करे।

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम० अधिक-मास निमित्तकपिण्डोऽयम् ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। (पुनः प्रत्यवने जलम्)

एक दौना जल का भर कर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्यद्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् षोडशाह श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवने जलानियथा विभागानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठताम्।

दौने का जल पिण्डों के ऊपर चढ़ावे।

(गन्धादिदानम्) सब सामग्री चढ़ावे। तेल की १६ बत्ती बाले।

(संकल्पः) अद्यामुकगोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै षोड-

शाह श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् षोडशाहश्राद्धे पिण्डोपरि एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

(अक्षय्योदकम्) अन्न जल परोसे संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह-श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् षोडशाहश्राद्धे इदं अक्षय्योदकं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(सव्यं दक्षिणासंकल्पः)

सव्य होकर १६ पिण्डों की दक्षिणा का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाहश्राद्ध-अन्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् षोडशाहश्राद्धे षोडशपिण्ड-प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थम् ताम्रमर्कदैवतम् अमुक गोत्रायऽमुकशर्मणेब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रददे।

(अपसव्यम्) अपसव्य होकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षोडशाह श्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तम् षोडशाहश्राद्धे पिण्डोपरि अच्छिन्नजलधारां ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

घड़िया या करवा उठाकर पिण्डों के ऊपर जल की धार दे। **(सव्यम्)** सव्य होकर हाथ जोड़े। यह मन्त्र पढ़े।

अनादिनिधनो देवः० ॥

(अपसव्यम्) अपसव्य होकर हाथ जोड़े। मन्त्र—

इह लोकं परित्यज्य० ॥

पिण्डों की कुशा निकाल कर अलग रख दे फिर सब पिण्ड वहाँ से उठाकर सिलादे।

॥ इति षोडशाहश्राद्धम् समाप्तम् ॥
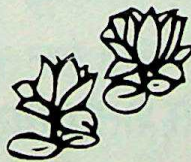
अथ कपिलाधेनु कर्म लिख्यते

(सव्यं ब्राह्मणवरण संकल्पः)

सव्य होकर ब्राह्मण के वरण का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै प्रेतोद्धारणार्थाय रुद्रधेनुदान ग्रहीतुम् यथानामगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं एभिः पुष्प अक्षतताम्बूल पुंगीफलवासोभिः त्वामहं वृणे।

(तिलकम्) ब्राह्मण के तिलक करे।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय ॥

पौंहची बाँधे। **ॐ व्रतेन दीक्षा० ॥**

(आवाहनम्) दोनों हाथ पसारे।

आवाहयाम्यहं देवीं सुरभि लोकमातरम्।
पूज्यां त्रिभुवने देवीं गन्धर्वै किन्नरैः सह॥१॥
मानुषैर्भोगिभिश्चैव क्षीराब्धिजननी पुरा।
अमृतस्रावणीदिव्या सर्वयज्ञ प्रवर्तनी ॥२॥

(स्नानम्) गौ को इस मन्त्र से स्नान करावे।

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् देवस्त्वा सविता पुनातुव्वसोः

पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।

(शृंगेघृतस्पर्शनगंधाक्षतपुष्पमाल्यादिवस्त्रालंकारादिभिः पूजयेत्)

गौ के सीगों के घी लगावे, रोली का टेढ़ा तिलक काढ़े, और चावल लगाकर फूलों का हार पहरावे, फूल चढ़ावे, वस्त्र उढ़ावे। फिर बांये हाथ पर चावल धर कर सीधे हाथ से गौ के ऊपर छोड़े। नीचे लिखे मन्त्रों से प्रणाम करे ॥ मन्त्र–

उरः स्कन्धेपदस्कंभ कन्धे पर **ब्रह्माब्रह्म शिरस्तथा** सिर पर। **नमस्तेमस्तकेरुद्रं** माथे पर **अश्विकर्णेद्ववायोर्न्यसेत्** दोनों कानों पर ॥१॥ **पन्नगा शृङ्ग्योर्देवी** सींगों पर **चन्द्रमादित्य लोचने** आंखों पर **रसनायां पंचनद्यो** नाक पर **बाहुमेति भुजद्वयं** दोनों हाथों पर ॥२॥ **सिन्धु कुक्षौ समुद्रत्वा यमरोदसे** सीधी कोख पर **ऋषि मन्त्रः आयान्वातीर्थपादयोः** पैरों पर **इमम् मे गंगेतिप्रस्नवे गन्धर्वात्वा खुरन्यस्येत्** खुरों पर **नमोस्तु सर्पेभ्यो दिक्षुस्थाता द्विष्णोः सर्व देहके गौ मधुष्णे श्रियं गोमे पवित्रे सर्वमंगला** सारी देह पर ॥ **वेदोसि देवहुंकारे**

दन्तेषु च प्रजापतिः दांतों पर। **प्रतिष्ठाप्य ततो धेनु पूजयित्वा समुद्धत ॥**

(सव्यं तर्पणम्) सव्य होकर तर्पण करे। एक लोटा जल का लेकर जौ कुशा गौ की पूंछ पकड़कर ताँबे के पात्र में जल छोड़ता जावे। नीचे लिखे मन्त्रों से।

धेनुपुच्छं करे ग्राह्य यवांश्च कुशसंयुतान् ।
गृहीत्वा दुम्बरं पात्रं तर्पयेत् पितृदेवताः ॥
देवासुरास्तथानागा गन्धर्वाप्सरसां गणाः ।
वायुधारा जलाधारास्थैवाकाशगामिनः ॥
निराधाराश्च ये जीवाः ये जीवा धर्म चारिणः ।
तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया ॥

(कंठीकृत्वा) अंगोछा गर्दन के दोनों तरफ कर ले।

सनकः सनन्दनश्चैव तथैव च सनातनः ।
कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पंचशिखस्तथा ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ।

(अपसव्यं) अंगोछा जनेऊ सीधे कन्धे पर धर ले।

गोत्रपितृपितामह पितामहादिभ्यस्तिलोदकं नमः ॥ अस्मिन् कुलेहि ये जाता गतिर्येषां न विद्यते। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छो-

उदकतर्पणैः ॥ क्रियालोपगता ये च जात्यंधाः पङ्गवस्तथा ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुचछोदकतर्पणैः । आवृणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः । वंशद्वये चास्मदा प्रसूता भृत्यास्तथैव सुतसेवकाश्च ॥ मित्राणि शिष्या पशवश्च वृक्षास्तेभ्यः स्वधातोयमिदं ददामि ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥

(संकल्पः) गाय की पूंछ हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै अद्य इमां कपिलां कांचनशृङ्गीं रौप्यखुरां कांस्यदेहां वस्त्रयुगावृतां घंटाभरणभूषितां ऋग्वेद मयीं सर्वतीर्थमयीं रुद्राणां मातरं वसूनां दुहितारं आदित्यानां स्वसारं सर्वदानेषूत्तमोत्तमां सर्वदेवमयीं अभिज्ञानां कुंकुममाल्य गन्धैरर्चितां सूर्यदेहसमुद्भवाम् यमद्वारे महानद्युत्तारणार्थं धर्मराजप्रीत्यर्थं शास्त्रोक्त

फलप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै यथानामगोत्रायऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय वृषोत्सर्ग दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इमां रुद्रधेनुं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ महाब्राह्मण को दे दे।

(स्वस्तीति प्रतिवचनम्) महाब्राह्मण स्वस्ति कहे।

(गौदान प्रतिष्ठा संकल्पः) गौ दान प्रतिष्ठा का सकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य० स्वर्गलोकप्राप्तिकामनया रुद्रधेनुप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थम् ताम्रमर्कदैवतम् यथानामगोत्राय अमुक शर्मणे महाब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ महाब्राह्मण को दे दे।

(प्रदक्षिणा) गौ की परिक्रमा करे।

यानि यानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

फिर हाथ जोड़े। मन्त्र–

या लक्ष्मीः सर्वभूतेषु या च देवेष्ववस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

॥ इति गोदानम् समाप्तम् ॥

अथ षष्ट्युत्तर शतत्रयम् कर्म लिख्यते

(सव्यं प्रतिज्ञा संकल्पः) **अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै षष्ट्युत्तरशत त्रयवर्ष दिनेषु अहरहः सम्बन्धी पिण्डदानमहं करिष्ये ॥**

(अपसव्य, आसन संकल्पः) १ कुशावट लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै षष्ट्यधिक शतत्रय वर्ष दिनेषु इदमासनं ते मया० ॥

(अवनेजलम्) एक दौना जल का भरे।

(तत्र पवित्रं क्षिपेत्) उसमें १ कुशा का पवित्रा गेरे। मन्त्र–

शन्नो देवीरभिष्टय० ॥ सब सामग्री गेरे।

(अर्घपात्रंवामहस्ते धृत्वा) दौने को बांये हाथ पर धरे।

(पवित्रं भोजनपात्रे धृत्वा) पवित्रा भोजन के पत्ते पर धरे।

(तदुपरि किंचिदुदकांतरम् दत्वा)

पवित्रे पर कुशा से जल का छींटा लगावे।

(दक्षिणपाणिना संपुटितं कृत्वा) दौने को सीधे हाथ से ढके। मंत्र

ॐ या दिव्या आपः पयसा० ॥ (संकल्पः)

दौना सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रेतत्व०

अभीष्टलोका० षष्ट्र्युत्तरशतत्रय वर्षदिनेषु पिण्डस्थाने कुशोपरि अवने जलं ते मयादी० ।

(अर्घे पुनः प्रत्यर्घमस्तु वामपार्श्वे न्युब्जीकुर्यात्)
पवित्रा दौने में डालकर बांई तरफ उल्टा करे।

(गन्धादिदानम्) सब सामग्री चढ़ावे, तेल की बत्ती बाले।

(संकल्पः) **अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य अभीष्टलोका० षष्ट्र्युत्तर शतत्रयश्राद्धे एतानि गन्धादीनि ते मया दी० ।**

(चतुष्कोणमण्डलं कुर्यात्) चारों तरफ जल फेर दे।

यथा चक्रायुधो विष्णु० ।

(अन्नम् सजलं परिवेष्य) अन्न जल परोसे। (संकल्पः)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलो० षष्ट्र्युत्तर शतत्रय श्राद्धे इदमन्नोदकं मधुघृततिलसहितं ते मया० ॥

(वेदिकां कृत्वा) वेदी बनाकर जल छिड़के।

अयोध्या मथुरा० ॥

(रेखाकरणम्) १ कुशा से ३६० लकीरें खींचे।

(पुनः कुशान् ऐशान्यां दिशि त्यजेत्)

कुशा ईशान दिशा में रख दे।

(पिण्डासन–संकल्पः) ३६० कुशा लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलो० षष्ट्युत्तर शतत्रय पिण्डस्थाने कुशासनानि ते मया० ॥

(अवने जलम्) दौना जल का लेकर संकल्प करे। (संकल्प)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोका० षष्ट्युत्तर शतत्रय श्राद्धे कुशोपरि अवने जलं ते मया० ।

(षष्ट्युत्तर शतत्रयपिण्डानूदद्यात्) ३६० पिंड देकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोका० षष्ट्युत्तर शतत्रय श्राद्धे महामार्गे प्रतिदिन वर्ष पर्यन्तम् क्षुत्तृषा शान्ति निमित्तं एते षष्ट्युत्तर शतत्रय पिण्डास्ते मया दीयते० ॥ (नवत्युत्तरशतत्रयपिंडाः)

अधिक मास हो तो ३९० पिण्ड बनावे और इस प्रकार संकल्प कहे।

(ततः श्वानबलिः) गुंदा आटा लेकर यह मन्त्र पढ़े।

द्वौ श्वानौ श्यामसबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यां पिण्डं प्रदास्यामि रक्षताम् पथिकम् हितौ ॥ पिण्डों के पास रख दे।

(पुनः अवने जलं) जल का दौना लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोका० षष्ट्युत्तरशतत्रय० क्षुत्तृषाशांतये इदं प्रत्यवने जलं ते मया० ॥

(गंधादिदानम्) सब सामग्री चढ़ावे, ३६० बत्ती जलावे (संकल्प)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्ट लोका० षष्ट्युत्तरशतत्रय० क्षुत्तृषाशान्तये पिण्डोपरि एतानि गन्धादीनि ते मया दीयन्ते तवो० ॥

(अक्षय्योदकम्) अन्न जल परोसे, ३६० दौनों में जल भरकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व-वि० अभीष्टलोक० षष्ट्युत्तर० क्षुत्तृषा शान्तये पिण्डाग्रे मधुघृततिलसहितम् इदमन्नोदकम् ते मया दीयते तवोपतिष्टताम् ।

(अपसव्य पिण्डसिंचनार्थं अच्छिन्नजलधारां दत्वा)

अपसव्य होकर पिण्डों के ऊपर जल की धारा देवे। (संकल्प)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्ट लोका० क्षुत्तृषाशान्तये षष्ट्युत्तर

शतत्रय पिण्डोपरि सिंचनार्थं अच्छिन्न जलधारार्घस्ते मया० हाथ जोड़े। इमं लोकं परित्यज्य० ॥ (अभिगम्यतां विसर्जयेत्)

पिण्ड के नीचे की कुशा निकालकर सब पिण्डों को वहां से अलग कर दे।

(सव्यम् अन्नषट्रस संकल्पः) एक वर्ष के अन्न का और मीठा आदि सब चीजों का या उसकी दक्षिणा का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्टलोकावाप्त्यै मम पितुः मरणदिनपर्यन्तम् दशदिवस न्यून संवत्सरे भोग्यान्नपानादि व्यंजन ताम्बूलम् तन्मूल्योपकल्पितं द्रव्यं वा वर्षाशनत्वेन यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

ब्राह्मण को दे दे। फिर दान प्रतिष्ठा सिद्धि की दक्षिणा दे।

(संकल्पः) अद्या० क्षुत्तृषाशान्तये षष्ट्युत्तर शतत्रयपिण्ड प्रतिष्ठासिध्यर्थं ताम्रमर्क दैवतम् यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

वर्ष भर के जल देने को ३६० घड़े या कुलिये भरकर संकल्प करे। अधिक मास हो तो ३६० कुलिये भर संकल्प करे।

अद्या० शौचांतद्वितीयेऽन्हि अमुकगोत्रस्य० अक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोक वास कामनया आब्दिकवर्षपर्यन्तमिदं षष्ट्यधिकशतत्रय कौशिक घटसहितं जलतिलाक्षतैर्युतम् महादुःखोपशांत्यर्थं ते मया दीयते० ॥

(महाब्राह्मण भोजनसंकल्पं कृत्वा)

महाब्राह्मण के भोजन का संकल्प करे।

अद्या० प्रेतदाहक्षुधानिवारणार्थं इदं सिद्धान्नं उपस्करसहितं सदक्षिणं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देवे। कर्म करने वाला भोजन में से पांच ग्रास लेकर प्रेत और उसके गोत्र का नाम लेकर जल में छोड़ दे।

॥ इति षट्युत्तरशतत्रयम् कर्म समाप्तम् ॥
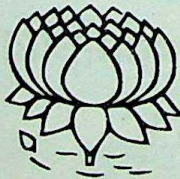
अथ सपिण्डी कर्म लिख्यते

(पूर्वम् स्नानम्) पहले स्नान करे।

(श्राद्धदेशमागत्य) जहां सपिण्डी करे, वहां आकर बैठे।

(सव्य पूर्वाभिमुखः श्राद्धवस्तूनि सिंचेत्)

सव्य होकर पूर्व को मुख करके श्राद्ध की सब चीजों पर नीचे लिखे मन्त्र से गंगाजल का छींटा लगावे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ **(रक्षादीपं स्थाप्य)**

पूर्व की ओर घी का दीवा बाले, फिर चावल के आटे के ५ पिण्ड बनावे। दूध, गंगाजल, मीठा, तिल ये भी मिला ले। ३ तो बाप, बाबा, पड़बाबा, १ विकर पिण्ड छोटा, १ प्रेत पिण्ड, यह पिण्ड लम्बा हो। थोड़ा सा आटा भोजन के लिये रख ले, फिर पांच पत्ते धरे। एक पूर्व में विश्वेदेवा का, एक पत्ता पश्चिम में प्रेत का, तीन पत्ते दक्षिण में पितरों के (बाप, बाबा, पड़बाबा), सीधे हाथ की तरफ से गिने, फिर एक-एक पत्ता उनके नीचे और धरे।

(श्राद्धारम्भे आचमनम्)

श्राद्ध आरम्भ होने से पहले गंगाजल का आचमन करे। मन्त्र—

ॐ गङ्गा विष्णुः ॥३॥ तीन बार पढ़े।

(हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य) फिर हाथ पैर धो डाले। मन्त्र

ॐ अपवित्रः अपवित्रो वा सर्वावस्थाङ्ग० ॥

(पवित्रीधारणम्) कुशा की पवित्री पहरे। मन्त्र—

द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये च त्रीन् कुशांतथा।
पादमूले शिखायान्तु सकृद्यज्ञोपवीतके ॥

(प्रार्थना) पूर्व को हाथ जोड़े। मन्त्र—

देवकीनन्दनं कृष्णं शंखचक्रगदाधरम्।
आरम्भे कर्मणां श्राद्धे पुण्डरीकाक्षं स्मरेद्धरिं॥

(सव्यं, पूर्वाभिमुखः संकल्पः)

फिर पूर्व को मुंह करके हाथ में जल लेकर संकल्प करे।

ॐ तत्सद्विष्णुर्विष्णुर्विष्णु आद्यौ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय अद्य श्री ब्रह्मणोऽन्हिद्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे वेदोक्तफल प्राप्तिकामसिध्यर्थे वर्तमान सम्वत्सरे अमुकायने भास्करे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकपितृ-

त्वप्राप्तये अमुकगोत्राणां अस्मत्पितामह प्रपितामहवृद्धप्रपितामहानां अमुकामुक शर्मणां सपिण्डीकरणश्राद्धमहं करिष्ये ॥

(गायत्री त्रिर्जपेत्) तीन बार गायत्री जपे।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायैस्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

(विश्वेदेवासन संकल्पः) कुशा का पवित्रा हाथ में लेकर विश्वेदेवा के आसन का संकल्प करे। (संकल्पः)

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्यामुक गोत्राणां पितामहादित्रयाणां अमुकामुक शर्मणां सपिण्डीकरण श्राद्धसम्बन्धिनः कालिकानामानो विश्वेदेवा इदमासनम् वो नमः ॥

पवित्रा विश्वेदेवा के ऊपर के पत्ते पर रख दे।

(अपसव्येन पित्रासन संकल्पः) दक्षिण को मुंह करके तीन कुशा के पवित्रे लेकर पितरों के आसन का संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक पितृत्व प्राप्तिकामनया सपिण्डीकरणश्राद्धे अद्यामुक गोत्राणां पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपिताम-

हानाम् इमानि त्रीण्यासनानि त्रेधाविभज्य तेभ्यः स्वधा ॥

तीनों पवित्रे ऊपर के बाप, बाबा, पड़बाबा, तीनों के पत्तों पर धरे।

(प्रेतासन संकल्पः) १ पवित्रा लेकर प्रेत के आसन का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्त्यै सपिण्डी-करणश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ प्रेत के ऊपर के पत्ते पर रख दे।

(सव्यं आचम्य) सव्य होकर आचमन करे। मन्त्र–

ॐ गंगाविष्णु० ॥३॥ तीन बार पढ़े।

(यवै विश्वेदेवानामावाहयेत्)

जौ के दाने हाथ में लेकर दोनों हाथ पसारे। मन्त्र–

ॐ विश्वेदेवा शृणुते मे इम ᳪ हवं मे ये अन्तरिक्षे ये उपद्यविष्ठ। ये अग्नि जिव्हा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ॥१॥ ॐ यवोमि यवयास्मद्वेषो यवया रातिरितिः। दिवे त्वांतरिक्षायै तां पृथिव्यै त्वां शुद्धेतां लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ॥

(यवान् विकार्य) जौ के दाने विश्वेदेवा पर छोड़े। मन्त्र–

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ।
ये यत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥

(अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः पितृन् आवाहयेत्)

दक्षिण को मुख करके और तिल के दाने हाथ में लेकर पितरों का आवाहन करे अर्थात् दोनों हाथ पसारे ॥ मन्त्र–

ॐ उशन्तस्त्वा निधी मह्युशत समिधी-महि ।उशन्नुशतआवहपितृन् हविषे अत्तवे॥

(तिलान्विकीर्य) पितरों के आसन पर तिल छोड़े। मन्त्र–

ॐ अपहतां असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः० ॥

ॐ आयान्तुनः पितरः सोम्यासो अग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदं-तोधि ब्रुवन्तु त्वेवं त्वस्मान् ॥

(एवं तूष्णीं प्रेतासने तिलान् क्षिपेत्)

प्रेत के आसन पर चुपचाप तिल छोड़े।

(सव्यम् आचमनम्) फिर सव्य होकर आचमन करे।

गंगाविष्णुः० ॥३॥ (विश्वेदेवार्घपात्रेपवित्रेधृत्वा)

विश्वेदेवा के आगे अर्घ पात्र का दौना धरे। उसमें एक कुशा का पवित्रा डाले। मन्त्र

ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यो सवितु र्वप्रसव

ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनीतच्छकेयम् ॥

फिर उसमें जल भरे। मन्त्र–

शन्नोदेवीरभिष्टये० ॥ (गन्धपुष्पतूष्णीं क्षिपेत्)

चन्दन चूरा, तुलसीदाल, फूल और जौ चुपके से गेरे। मन्त्र–

ॐ यवोऽसियवयाऽस्मद्वेपोयवया० ।

(हस्तार्घ दक्षिणेनादाय वामहस्ते धृत्वा)

दौने को सीधे हाथ से उठाकर बांये हाथ पर धरे।

(पवित्रां भोजनपात्रे धृत्वा) दौने में से पवित्रा निकाल कर विश्वेदेवा के नीचे के पत्ते पर धरे।

(किंचिदुदकान्तरं दत्वा)

कुशा द्वारा हंडले के जल से पवित्रे को छींटा लगावे, बांये हाथ के दौने को सीधे हाथ को चित्त करके ढके। मन्त्र–

ॐ या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षा उतपार्थिवीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः स ꣳ स्योना सुहवा भवन्तु ॥

फिर उस दौने को सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे। **(संकल्प)**

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य ऽमुकनाम प्रेतस्य०

अमुकगोत्राणां पितामहप्रपितामह वृद्ध प्रपितामहानाम् अमुकामुक शर्मणां सपिण्डी-करणश्राद्धे कालका नाम्नो विश्वेदेवा एषहस्तार्घो वो नमः ॥

दौने का थोड़ा सा जल विश्वेदेवा के आसन पर चढ़ावे।

(अर्घे पुनः प्रत्यर्घमस्तु) फिर उस दौने को विश्वेदेवा के पास धरे। वही पवित्रा उसमें गेर दे जो काढ़ कर धरा था।

(अपसव्यं पितामहादित्रय हस्तार्घ पात्रे पवित्रे धृत्वा)

पितरों के आसन के आगे तीन दौने धरे। बाप, बाबा, पड़बाबा फिर उनमें एक-२ कुशा का पवित्रा गेरे। मन्त्र–

ॐ पवित्रे० ॥

उनमें जल भरे। मन्त्र–

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयः० ॥ (गन्धपुष्पतूष्णीं क्षिपेत्)

चन्दनचूरा, तुलसीदाल, फूल और तिल चुपचाप गेरे। मन्त्र–

ॐ तिलोऽसिसोम देवत्यो गोसवोदेव निर्मितः। प्रयत्नमद्भिः पृक्तः स्वधयापितॄन् लोकान् पृणाहिनः ॥१॥

(हस्तार्घ दक्षिणेन आदाय वामहस्ते धृत्वा)

फिर उनमें से एक अर्घ को सीधे हाथ से उठाकर बांये हाथ पर धरे।

(पवित्रं भोजनपात्रे धृत्वा)

फिर पवित्रा निकाल कर नीचे के पत्तों पर धरे।

(तदुपरि किञ्चिदुदकांतरं दत्वा)

हन्डले के जल से पवित्रे की कुशा से छींटा दे। फिर उस दौने को सीधे हाथ को पट करके ढके।

ॐ या दिव्या आप पयसा० ॥

(पुनः दक्षिणहस्ते धृत्वा संकल्पं कुर्यात्)

फिर सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व निर्वृत्तिपूर्वकं पितृत्व प्राप्तये अमुकगोत्र पितामह अमुक शर्मन् सपिण्डी करणश्राद्धे एष हस्तार्घः ते स्वधा ॥

दौने का थोड़ा सा जल पित्र के पश्चिम की ओर के पहले आसन पर चढ़ावे। फिर उसमें पवित्रा गेर कर पित्र के आसन के पास धर दे।

(एवं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहेभ्यो हस्तार्घं दद्यात्)

पित्रों के दोनों अर्घ इसी प्रकार करे जैसे बाप का किया है। ऐसे ही बाबा पड़बाबा का करे।

(पुनः प्रेतार्घपात्रे पवित्रं धृत्वा)

फिर प्रेत के आगे अर्घ पात्र धरे जिस प्रकार पित्रों के आगे धरा है, उसमें एक कुशा का पवित्रा गेरे, जल भरे, तिल, फूल, रोली और चन्दन चूरा चुपचाप गेर दे।

(हस्तार्घ दक्षिणेनादाय वामहस्ते धृत्वा)

उस दौने को सीधे हाथ से उठाकर बांये हाथ पर धर ले।

(पवित्रम् भोजनपात्रे धृत्वा) दौने में से पवित्रा निकालकर प्रेत के भोजन के नीचे के पत्ते पर धरे।

(तदुपरि किंचिद्दुदकान्तरं दत्वा)

कुशा से उस हंडले के जल का पवित्रे को छींटा लगावे फिर उस दौनं को सीधे हाथ से पट करके ढके। मन्त्र–

ॐ या दिव्या आपः पयः।

फिर सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोका० सपिण्डी करणश्राद्धे एष हस्तार्घः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

दौने का थोड़ा जल प्रेत के आसन पर चढ़ावे। दौना, प्रेत के आसन के पास रखकर उसमें पवित्रा उठाकर गेर दे।

(प्रजापतिम् श्री सरस्वतीन्द्राऋषयः प्रथमाया पितरो देवता द्वितीयाया यजमाना अनुष्टुप छन्दः सहार्घ्यकरणे विनियोगः)

फिर प्रेत के अर्घ को सीधे हाथ से उठाकर पित्रों के तीनों अर्घों में से एक-एक हिस्सा जल मिला दे। इस मन्त्र से–

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः तेषा ᳬं श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन् लोके शत ᳬं समाः ॥

(प्रेतार्घपात्रं प्रेतासनात् दक्षिणपार्श्वे न्युब्जी कृत्वा)

प्रेतार्घ का पात्र प्रेत आसन के ऊपर की तरफ उल्टा कर दे।

(पितामहार्घ उत्ताने प्रपितामहार्घ पात्रे उपरि धृत्वा तद्द्वयं उत्ताने वृद्धप्रपितामहार्घ पात्रे उपरि धृत्वा वामपार्श्वे न्युब्जीकुर्यात्)

पित्र अर्घ बाबा के पात्र को उठाकर पड़बाबा के पात्र के ऊपर धरे और पड़बाबा और बाबा दोनों के पात्र को उठाकर तड़बाबा के पात्र पर रख दे फिर तीनों को एक साथ पित्र आसन से दक्षिण में लौटा कर रख दे। थोड़ी-२ कुशा पात्रों के ऊपर रख दे।

(सव्य आचम्य) सव्य होकर आचमन करे।

गंगा विष्णु० ३॥

(विश्वेदेवानां गन्धादिदानम्)

विश्वेदेवा पर चन्दन चूरा, चावल, मीठा, फूल, धूप, आदि सब सामग्री चढ़ावे, १ बत्ती घी की बाले। (संकल्पः)

अद्यामुक गोत्रय अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोका० अमुक गोत्राणां पिताम-हादि त्रयाणाममुकाऽमुकशर्मणां सपिण्डी करण श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्धादीनि वो नमः ॥

(चतुष्कोणमण्डलं कुर्यात्) विश्वेदेवा के पत्तों के चारों ओर जल फेर दे। मन्त्र—

यथा चक्रायुधो विष्णु०

(अपसव्यम् पित्रादि त्रयेभ्यो गन्धादिदानम्)

इसी प्रकार पित्रों के ऊपर सब सामग्री चढ़ावे। ३ बत्ती बाले, संकल्पः

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोक० अमुकगोत्र० पितामह अमुकशर्मन् सपिण्डी० सम्बन्धि एतानि गन्धादीनि ते स्वधा।

(एवं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोः संकल्पं कुर्यात्)

इसी प्रकार दो संकल्प और करे। पड़बाबा और तड़बाबा का, दूसरे में प्रपितामह, तीसरे में वृद्ध प्रपितामह ऐसा कहे।

(चतुष्कोणमण्डलं कुर्यात्)

तीनों पत्तों के चारों ओर अलग २ जल फेर दें। मन्त्र–

यथा चक्रायुधोविष्णुस्त्रैलोक्यम्० ॥

(पुनः प्रेताय गन्धादिदानम्) फिर प्रेत के आसन पर रोली आदि सब सामग्री चढ़ावे, १ बत्ती बाले। (संकल्पः)

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलोका० सपिण्डी० एतानि गन्धादीनि ते मया०। (चतुष्कोणमण्डलं कुर्यात्)

चारों तरफ जल फेर दे। मन्त्र–

यथा चक्रायुधोविष्णुस्त्रैलोक्यम्० ॥

(सव्यं आचम्य) सव्य होकर आचमन करे।

गंगाविष्णुः० ३ ॥ हाथ जोड़े। (प्रार्थना)

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

विश्वेदेवा के पास एक दौना जल का भर कर धरे, उसमें आटे के स्वाहा छोड़े। (सव्यं) सव्य होकर।

ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा इदमग्नये।
ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा। इदं सोमाय पितृमते ॥ (अपसव्यम्)
ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः ॥

पृथ्वी पर पित्रों के आगे आटे का स्वाहा छोड़े।

(सव्यं विश्वेदेवान्नम् सजलं परिवेष्य)

सव्य होकर विश्वेदेवा के समीप एक दौने में जल और एक दोने में आटा करके धरे।

(मधुनाभिधार्य) दौने के आटे पर शहद लगावे। ये मन्त्र पढ़े—

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिंधवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता

मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥१॥

विश्वेदेवा पर दोनों हाथ सीधे करके ढके, मन्त्र—

ॐ पृथिवी ते पात्रम् द्यौरपिधान ब्राह्मणस्यमुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपा ꣳ सुरे ॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयमिति पठित्वा ॥

इसको पढ़कर दोनों पात्रों को सीधे हाथ के अंगूठे से स्पर्श करे जिसमें अन्न जल परोसा है। मन्त्र—

ॐ इदमन्नम् इमा आपः, इदमाज्यम् इदं हविः ॥ (संकल्प)

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य अमुकगोत्राणाम् पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहानाममुकामुक शर्मणां सपिण्डी० सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतदन्नं सोपकरणं वो नमः ।

(अपसव्यं पित्रादित्रयाणामन्नं जलं परिवेष्य)

अपसव्य होकर पित्रों के तीनो आसन पर अन्न जल परोसे।

(मधुनाभिधार्य) शहद लगावे यह मन्त्र पढ़े।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु ॥

(ॐ पृथिवी ते पात्रमित्यादिना पात्रमालभ्य)

पित्रों के ऊपर उल्टा हाथ करके ढके। यह मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं ॥

(ततोदक्षिणांगुष्ठेन स्पर्शयेत्)

सीधे हाथ का अंगूठा पित्रों के अन्न जल से लगावे। मन्त्र—

ॐ श्रीकृष्णहव्यमिदं रक्षमदीयं इदमन्नम्०॥

(तिलान् विकीर्य्य) फिर तिल छोड़े। (संकल्पः)

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य अमुकगोत्राणां अस्मत् पितामह सपिण्डी० सम्बन्धिनो एतदन्नं सोपकरणं ते स्वधा०

पड़बाबा, तड़बाबा दोनों का ऐसे ही संकल्प और करे। दूसरे में प्रपितामह तीसरे में वृद्धपितामह सपिण्डी० ऐसा कहे।

(प्रेतान्नं सजलम् परिवेष्य)

प्रेत के आसन पर अन्न जल परोसे। (संकल्पः)

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलो० सपिण्डी० इदमन्नंसोपकरणंते मया दीयते तवोपति० ॥

(पिण्डं कृत्वा विकरासनम्)

विकर पिण्ड का आसन दे। कुशा हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़े—

असंस्कृतप्रनीतानां त्यागिनां कुलभागिनां।
उच्छिष्टभागदेयानां दर्भेषु विकरासनम् ॥

प्रेत के पत्ते से ऊपर की ओर कुशा रख दे, विकर पिण्ड हाथ में ले यह मन्त्र पढ़े।

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुलेमम।
भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यान्तु परांगतिम् ॥

पिण्ड को कुशा पर रख दे, एक दौना जल का भर के पिण्ड के ऊपर उल्टा रख दे।

(सव्यं आचम्य) सव्य होकर आचमन करे।

गंगा विष्णुः० ३ ॥

(अपसव्यं, वेदिकां कृत्वा जलेन संप्रोक्ष्य)

पित्रों के लिए मिट्टी की लम्बी वेदी बनावे। उस पर कुशा से जल छिड़के। यह मन्त्र पढ़े।

अयोध्या मथुरा मायाकाशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

(त्रिरेखाकरणम्) वेदी पर कुशा की जड़ से तीन लकीर खींचे।

(कुशाम् ईशान्याम् दिशि त्यजेत्)

उस कुशा को ईशान दिशा में छोड़ दे।

(ज्वलदंगारं भ्रामयित्वा)

जलती कुशा लेकर वेदी के चारों ओर फेर दे। मन्त्र—

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽसुरः संतः स्वधया चरन्ति। परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाल्लोकान्प्रणुदात्वस्मात् ॥

(दक्षिणतो निदध्यात्) उस कुशा को दक्षिण की ओर रख दे।

(सव्य आचम्य) सव्य होकर आचमन करे।

ॐ गङ्गा विष्णु० ३ ॥

(अपसव्यम् समूलकुशत्रयं वेदिकायां धृत्वा)

अपसव्य होकर ३ कुशा जड़ समेत वेदी की लकीरों पर रख दे।

(अर्घपात्रम्) एक दौना जल भरकर उसमें सामग्री गेरे (संकल्प)

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रेतत्व० सपिण्डीकरणश्राद्धनिमित्तक श्राद्धेऽमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् पिण्डस्थाने कुशोपरि अत्रावने जलं निक्ष्वय ते स्वधा ॥

दौने का जल कुशाओं की जड़ के ऊपर चढ़ावे उस दौने को अपने सन्मुख रक्खे।

(एवं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोरपि दद्यात्)

इसी तरह पड़बाबा व तड़बाबा का संकल्प करके दौने का जल कुशा के बीच में और ऊपर चढ़ाकर अपने सामने रख ले। **(पिण्डं दद्यात्)** एक पिण्ड लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य

प्रेतत्व० सपिण्डी० पितृत्वप्राप्तये अमुकगोत्रपितामह वसुस्वरूप अमुक शर्मन् एष पिण्डस्ते स्वधा ॥

हाथ का पिण्ड वेदी की कुशा के ऊपर रख दे।

(एवं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोर्निध्यात्)

इसी प्रकार पड़बाबा के संकल्प में रुद्रस्वरूप, तड़बाबा के संकल्प में आदित्य स्वरूप ऐसा कहकर पिंड का संकल्प कर कुशा पर रखे।

(कुशमूले करम् संप्रोक्ष्य लेपभागभुजस्तृप्यंत्विति)

बांये हाथ में आटा और सीधे में कुशा लेकर वह आटा पिण्डों की जड़ में कुशा से कतर दे। मन्त्र–

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वं॥

(वामावर्त्तनोउदङ्मुखीभूय, श्वासं निरुध्य पितृ मूर्तिभास्करं ध्यायन् दक्षिणेन प्रत्यावर्तयेत्)

उत्तर की तरफ से श्वांस खींचे, पित्रों और सूर्य्य नारायण का ध्यान करके दक्षिण की ओर छोड़ दे।

(ततो नीवीं विसृज्य) आंट की कुशा निकाल दे।

(अर्घसंकल्पः) दौना जल का भरकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० सपिण्डी० अमुकगोत्राणां पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहानां पिण्डोपरि अर्घस्तेभ्यः स्वधा ॥

दौने का जल तीनों पिण्डों पर चढ़ावे।

(सूत्रं गृहीत्वा) पिण्डों पर तागा चढ़ावे। मन्त्र—

नमो व पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरोद्देष्मैतद्वः पितरो वासः आधत्तः (गन्धादिदानम्)

पिण्डों पर सब सामग्री चढ़ावे तीन बत्ती बाले (संकल्पः)

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य अमुक गोत्राणां पितामहादित्रयाणां अमुकामुक शर्मणां सपिण्डी० पिण्डोपरि एतानि गन्धादीनि त्रिधा विभज्य वः स्वधेति ॥

संकल्प का जल तीनों पिण्डों पर चढ़ा दे।

(एवं प्रेतस्य वेदिकां कुर्यात्)

फिर ऐसे ही एक प्रेत की वेदी बनावे।

(जलेन संप्रोक्ष्य) उस पर जल का छींटा लगावे। मन्त्र—

अयोध्या मथुरा माया० ॥

(रेखाकरणम्) कुशा से वेदी पर एक लकीर खींचे।

(तान् कुशान् ईशान्यां दिशि त्यजेत्)

उस कुशा को ईशान दिशा में रख दे।

(ज्वलदंगारम् भ्रामंयित्वा)

जलती कुशा लेकर उस वेदी के चारों तरफ फेर दे। मन्त्र–

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति० ॥

(कुशासन संकल्पः) फिर कुशा लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व सपिण्डीकर० पिण्डस्थाने कुशासनं ते मया० ॥ कुशा वेदी पर रख दे ॥

(अर्घेअवने जलम्) दौना जल से भरकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व अभीष्टलो० ॥ अर्घेऽवने जलं मयादी-यतेतवोपतिष्ठताम् ।

फिर दौने का जल कुशा पर चढ़ा दे।

(पिण्डँ दद्यात्) फिर प्रेत के लम्बे पिण्ड का संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० अभीष्टलो० सपिण्डी एषः पिण्डः ते मया० ॥ वेदी की कुशा पर रख दे।

(प्रत्यवनेजलम्) जल का दौना लेकर संकल्प करे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व० सपिण्डी० पिण्डोपरि प्रत्यवने जलं ते मया दीयते० ॥

दौने का जल पिण्ड पर चढ़ा दे।

(गन्धादिदानम्) पिंड पर सब सामग्री चढ़ावे १ बत्ती बाले **(संकल्पः)**

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व० सपि-ण्डी० पिण्डोपरि एतानि गन्धादीनि ते मया०

(अन्नं सजलं परिवेष्य) अन्न जल परोसे।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व० सपिण्डी० इदमन्नोदकं ते मया० ॥

(सुवर्ण रजतशलाकया कुशेन वा पिण्डं त्रिधा भित्त्वा प्रेत पिण्डम् उत्थाय हस्तद्वयेन पितृन्भास्कर-मूर्तीन्ध्यायन् ब्राह्मणाय ददे)

प्रेत के पिण्ड को उठाकर महाब्राह्मण को दे दे। उस पिण्ड को सोने या चांदी की सींक से या कुशा से तीन भाग करे। आप सूर्य्य की ओर पित्रों का ध्यान करे।

(पितामहपिण्डमादाय दक्षिणहस्तेन तृतीयं प्रेतपिण्डभागमादाय)

बाबा का पिण्ड उठाकर बायें हाथ में धरे और प्रेत पिण्ड का एक हिस्सा लेकर संकल्प करे। संकल्पः—

अद्यामुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व

निवृत्तिपूर्वकपितृत्व प्राप्तिकामनया अमुक गोत्रेण पितामहेन अमुकशर्म्मणा सहामुक प्रेतस्य पिण्ड मेलनं करवाणि, कुरुष्वेत्यनुज्ञातः ॥

बाबा के पिण्ड में मिलाकर यह मन्त्र पढ़े। मन्त्र—

ॐ ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः तेषां ꣳ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन् लोके शत ꣳ समाः ॥

वेदी पर ही रख दे। इसी प्रकार प्रेत पिण्ड के दोनों भाग दोनों पिण्डों में मिलावे और वेदी पर ही रख दे दूसरे पिण्ड पर प्रपितामहेन तीसरे पिण्ड पर वृद्ध प्रपितामहेन ऐसा शब्द बोलता जावे बाकी सब संकल्प पहली तरह से करावे।

(पिण्डत्रयेऽर्घ्यम्)

तीन पिण्डों पर एक-एक दौना जल का भर कर चढ़ावे।

(गन्धसूत्रादिना संपूज्य) तीनों पिण्डों पर सूत सहित सब सामग्री चढ़ावे तीन बत्ती बाले। **(संकल्पः)**

अद्यामुक गोत्राणां पितामहादित्रयाणाम् अमुकामुकशर्म्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपिण्डी० पिण्डोपरि एतानि गन्धादीनि त्रिधा विभज्य वः स्वधेति ॥

संकल्प का जल तीनों पिण्डों पर चढ़ावे।

(पितृत्रयान्नपात्रेषु परिवेष्य)

तीनों पित्रों के आगे अन्न और जल परोसे। मन्त्र–

ॐ शिवा आपः सन्तु ॥

(इति जलम्) फिर जल चढ़ावे।

(सौमनस्यमस्तु पुष्पम्) फूल चढ़ावे।

(अक्षतं चारिष्टमस्तु) चावल चढ़ावे। **(संकल्पः)**

अद्यामुकगोत्राणां पितामहादित्रयाणां अमुकामुकशर्म्मणाम् सपिण्डीकरणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। जल छोड़ दे।

(सव्यं दक्षिणाम् दिशम् पश्यन् सुमनाः पिण्डोपरि, अघोराः पितरः सन्तु, पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्)

सव्य होकर पिण्डों के ऊपर जल की धारा दे और दक्षिण को देखता रहे। मन्त्र–

ॐ गोत्रन्नोवर्द्धतां दातारो नोभिवर्द्धन्ताम् वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो माव्यगमत् बहुदेयम् च नोस्तु अन्नम् च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्मकञ्चन।

(अपसव्येन पिण्डोपरि पवित्रान् दक्षिणाग्रान् कुशानास्तीर्य पयोधारां दत्वा)

अपसव्य होकर पिण्डों पर तीन कुशा धरे और वहीं पवित्री निकाल दे। पिण्डों पर दूध की धारा चढ़ावे और दक्षिण को देखता जाये। मन्त्र–

ॐ ऊर्ज्जं वहंतीरमृतं घृतं पयः कोलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयतमेपितॄन् ॥

(ततो नम्रीभूय) पृथ्वी पर माथा निवावे।

(मध्यमपिण्डाघ्राय उत्थापयेत्)

बीच के पिण्ड को हिला देवे।

(पिण्डाधारकुशान् उलमुकंच वन्हौ क्षिपेत्)

पिण्डों की कुशा निकालकर आग में गेर दे।

(सव्येन देवार्घपात्रं सञ्चाल्य)

सव्य होकर विश्वेदेवा के आसन को हिलावे।

(अपसव्येन पित्रादिपात्रान्यूत्तीकृत्य)

अपसव्य होकर पित्रों के अर्घपात्र और प्रेत का पात्र सीधा कर दे।

(सव्यं त्रिवारं आचम्य) सव्य होकर तीन आचमन करे।

गङ्गां विष्णुः० ३ ॥

(विश्वेदेवानां दक्षिणासंकल्पः)

विश्वेदेवा की दक्षिणा लेकर संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्राणां पितामहादि त्रयाणाममुकामुक शर्म्मणां सपिण्डी० सम्बन्धिनो

विश्वेदेवा कृतैतत् सपिण्डीकरणश्राद्ध प्रतिष्ठार्थं स्वर्णनिक्रेणीं ताम्रमर्कदैवतं यथानामगोत्राय महाब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ (अपसव्यम्)

अपसव्य होकर तीनों पित्रों की दक्षिणा का संकल्प करे।

ॐ अद्यामुकगोत्राणां पितामहादि त्रयाणां अमुकामुकशर्म्मणां कृतैतत् सपिण्डीकरण श्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं यथानामगोत्राय महाब्राह्मणाय दक्षिणां त्रिधा विभज्य वः स्वधा।

दक्षिणा महाब्राह्मण को दे दे। अब लोटा बजावे।

ॐ वाजे वाजे वत वाजि नो धनेषु विप्रा अम्रता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥

(सव्यम्) सव्य होकर विश्वेदेवा पर जौ छोड़े विसर्जन के लिये। मन्त्र—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यः० ॥ (अपसव्यम्)

मौन होकर पित्रों पर तिल छोड़कर विसर्जन करे। मन्त्र—

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्मप्रच्यवेताध्वरेषु

यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णतां स्यादिति श्रुतिः ॥ (रक्षादीपं निर्वाप्य)

एक अंजली जल की भरके दीवा बुझा दे।

(हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य) हाथ पैर धो डाले।

(सव्यं आचम्य) सव्य होकर आचमन करे और गंगा जल का सारे शरीर पर छींटा दे।

गङ्गा विष्णुः० ॥ (प्रार्थना) हाथ जोड़े। मन्त्र—

ॐ शांताकारं भुजंगशयनं० ।

(पिण्डान् जले प्रतिपादयेत्)

पहिले बीच के पिण्ड को दोनों हाथों से उठाकर थाली में धरे आगे का आगे और पीछे का पीछे धरे। थाली माथे से लगावे। हृदय से लगावे फिर पिण्ड जल में सिलादे।

(सप्तमनवमांकपूजनम्) फिर कुशा लेकर ७ का और ९ का अंक बना रोली से पूजन करे। सब सामग्री चढ़ावे। मन्त्र—

अनादिनिधनं विष्णुं शंखचक्रगदाधरम्।
नमामि भगवन् देव ! पितृमुक्तिप्रदो भव ॥

॥ सपिण्डीकर्म समाप्तम् ॥

अथ पददानम्

अद्य कृतैतत्सद्० अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्मा अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्म्मणः सपिण्डन् शुद्धश्राद्धान्तरे त्रयोदशाहे अक्षय्य स्वर्गा-

द्युत्तमलोकप्राप्तिकामा भूरी भोजनार्थमेतानि-च्छ्त्रोपानहवस्त्र मुद्रिकाकमण्डल्वासनभाज-नानिसप्तविधपदानि त्रयोदशानि च अन्यदपि व्यंजनसजल कुम्भद्रव्यशर्क रासहितानि समु-दायेभ्यो नानानामगोत्रप्रवरवेदाध्यायितेभ्यः ब्राह्मणेभ्यो यथाभागं विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

(स्वस्तीतिप्रतिवचनं ब्राह्मणो वदेत्) लेने वाला ऐसा कहे।

दान की विधि—मकान का दान संकल पकड़कर, हाथी का दात पकड़कर, घोड़े का माथे के बाल पकड़कर, गौ की पूंछ पकड़कर, भैंस का दाहिना सींग पकड़कर, भेड़ बकरी का कान पकड़कर, ऊंट का गला पकड़कर, तलवार की मूंठ पकड़कर क्रच चक्र बीच से पकड़ कर, दासी के माथे के बाल पकड़कर और स्त्री का हृदय पर हाथ रखकर करना चाहिए। जो सुपात्र हो उसको ही दान देना योग्य है। ब्राह्मण को शर्म्माहं, क्षत्रिय को वर्माहं, वैश्य को गुप्ताहं और शूद्र को दासोऽहं कहना चाहिए। यदि पुरुष की मृत्यु हो उसका बाबा पड़बाबा जीवित हो तो उसका पिण्ड वसु स्वरूप, रुद्र स्वरूप आदित्य स्वरूप पिण्ड देवे। यदि स्त्री की मृत्यु हो और उसकी मां दादी पड़दादी जीवित हो तो उसका पिण्ड गायत्री, सावित्री, सरस्वती ऐसा कहकर पिण्ड देवे। पुरुष के संकल्प में गोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य और स्त्री के संकल्प में गोत्राया ऽमुकनाम्न्याः प्रेताया ऐसा उच्चारण करे। ब्राह्मणों तथा वैश्यों के यहां सपिंडी में कुशावट और ब्राह्मणों के पिंडों पर यज्ञोपवीत चढ़ाना चाहिए।

॥ इति प्रेतमञ्जरी ॥

आरष्टी, पगड़ी विधान, श्रद्धाञ्जलि सभा

जनसाधारण और पंडितों के सुभीते के लिये आरष्टी, पगड़ी (उत्तरदायित्व समर्पण), श्रद्धाञ्जलि सभा का विधान अथवा परिपाटी निम्न प्रकार है।

आरष्टो–आरष्टी के दिन मध्याह्न में १३ ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्वक भोजन कराकर यथा सामर्थ्य दक्षिणा देकर विदा करें। प्रथम कर्म कर्त्ता को भोजन कराकर इष्ट मित्र एवं निकट सम्बन्धी भोजन करें।

पगड़ी विधान–अपराह्न २ बजे सभी इष्ट मित्र सम्बन्धी एवं पारिवारिक जन घर पर या सुविधाजनक स्थान पर एकत्रित हों। कर्मकर्त्ता कर्म के वस्त्र उतार कर ननिहाल अथवा ससुराल से आये नवीन वस्त्र धारण करे। पंडित या पुरोहित कलश, नवग्रह आदि का पूजन करावें। ननिहाल अथवा ससुराल से आयी पगड़ी का पूजन कराकर कर्मकर्त्ता या ज्येष्ठ पुत्र को पगड़ी धारण करावें। ननिहाल एवं ससुराल पक्ष की पगड़ी ही स्वीकार्य है। मान पक्ष की स्वीकार्य नहीं है।

कार्य सम्पन्न होने पर मन्दिर जाकर लोटे का जल चढ़ाकर देव दर्शन करें। वापसी में बाजार से फल आदि खरीद कर घर आ जावें। तथा सभी को हाथ जोड़कर विदाई लें।

श्रद्धाञ्जलि सभा–अपराह्न २ बजे नियत स्थान पर एकत्रित हों। मृतक का चित्र मेज या स्टूल पर रखकर धूपबत्ती, अगरबत्ती जलावें। प्रथम कर्म कर्त्ता पुष्पमाला चित्र पर अर्पित करें तत्पश्चात् पारिवारिकजन इष्ट मित्र एवं निकट सम्बन्धी पुष्प अर्पित कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर तथा मृतक के कार्य कलापों एवं सद्गुणों पर प्रकाश डालें। अंत में अपनी परिपाटी के अनुसार पाठ आदि करावें सभा विसर्जित करें।

पितृकर्म (पिंडदान) महात्म्य

पितृ कर्म (पिंडदान) से पितरों की मुक्ति एवं मनोकामना पूर्ण होती है। इह लोक, परलोक दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति होती है। जो नास्तिक, नराधम पुरुष इस प्रेत कर्म को नहीं करते उनके घर का जल पीने योग्य नहीं इसमें जरा भी संशय नहीं है वह जल सुरा तुल्य है। देवता, पितर उनके घर के सम्मुख कभी नहीं झांकते। उनके पुत्र पौत्र आदि दुर्गति को प्राप्त होते हैं। प्रेत की क्रिया न करने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब चाण्डाल तुल्य समझे जाते हैं।

इस पवित्र प्रेत कर्म के करने से सब पाप छूट जाते हैं। माता-पिता मृत्यु के पश्चात् मुक्ति को प्राप्त होते हैं। जिसने गया जी में श्राद्ध नहीं किया, वृषोत्सर्ग नहीं किया तथा मासिक एवं वार्षिक श्राद्ध नहीं किया वह पुत्र कहलाने योग्य नहीं है। वह तीनों प्रकार के ऋणों से मुक्त नहीं हो सकता और माता-पिता के तारने में समर्थ नहीं है।

इसलिए प्रत्येक पुत्र को श्रद्धापूर्वक अपने माता-पिता का प्रेत कर्म (पिण्ड दान) अवश्य करना चाहिए। यदि सन्तान न हो तो भाई-बन्धु कुटुम्ब-परिजन पिण्ड दान (प्रेत कर्म) में सहयोग करें ताकि मृत आत्मा को शान्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति हो।

पुस्तकें मिलने का पता–

जवाहर बुक डिपो

निकट आर्यसमाज, स्वामीपाड़ा मेरठ

लेज़र टाईप सैटिंग : क्रिएटिव कम्प्यूटर प्वाइंट, मेरठ। दूरभाष : ७६९३५३

कर्मकाण्ड की पुस्तकों की सूची

पं० रामस्वरूप शर्मा कृत :

पुस्तक	मूल्य
ज्योतिष सर्व संग्रह	32
विवाह पद्धति	16
हवन पद्धति	16
यज्ञोपवीत–उपनयन पद्धति	16
एकादशादि सपिण्डी	16
श्राद्ध पद्धति	16
प्रेत मंजरी	16
पंचनारायण बलि	16
मूल शांति	16
पंचक शांति	16
मृतक कर्म विधि	10
देव ऋषि पितृ तर्पण	5
वासिष्ठी हवन पद्धति	20
सरल विवाह पद्धति (एक घंटे में विवाह)	10
देव पूजन–जन्मदिन पूजन	10
नवग्रह और ज्योतिष	25

अन्य लेखकों की पुस्तकें :

पुस्तक	मूल्य
भारतीय ज्योतिष–नेमिचंद	180
दुर्गा सप्तशती भा० टी०	50
रुद्राष्टाध्यायी भा० टी०	40
वृहद स्तोत्र रत्नाकर	60
नित्य कर्म विधि	60
सौ वर्षीय शताब्दी पंचांग	450
कर्मकाण्ड भास्कर–विशालमणी	75
पूजा भास्कर	50
ग्रह शांति प्रयोग–दौलतराम गौड़	60
प्रतिष्ठा पद्धति–अशोक गौड़	60
मंत्र सागर	100
दुर्गार्चन पद्धति	100
शिवार्चन पद्धति	100
गरुण पुराण भा० टी०	80
हनुमद् उपासना संग्रह	60
एकादशी महात्म्य भा० टी०	40
अनिष्ट ग्रह शांति	8
श्री सूक्तम	30
सर्वदेव प्रतिष्ठा मयूख– दौलतराम गौड़	200
प्रतिष्ठा महोदधि– वायुनंदन मिश्र	150
गृह शान्ति पद्धति–वेणीराम गौड़	50

जरुरी सूचना

पं० रामस्वरुप शर्मा, मेरठ निवासी की कर्मकाण्ड की असली, सर्वशुद्ध, सम्पूर्ण, बढ़िया कागज–छपाई की पुस्तकों के लिए खरीदते समय जवाहर बुक डिपो (गुजरी बाजार वाली दुकान) निकट आर्य समाज, स्वामी पाड़ा मेरठ का नाम–पता देखकर ही पुस्तक खरीदें।